मूल्य : 25 रुपये
जुलाई - सितम्बर, 2023

वर्ष : 13, अंक : 49

नर्मदा समग्र

नदी के घर से नदी की बात...

रिद्धी - सिद्धी के दाता का, करो मन में विचार,
गूंथों मिट्टी और पानी, दो गजानन का आकार,
बिना रसायन रंगों के, मन भावों से हो श्रृंगार,
घुल जाये पानी में माटी,
यही विसर्जन की स्वस्थ परिपाटी।

पंचम पुण्य स्मरण स्व. अमृतलाल वेगड़ जी

पाँचवी पुण्यतिथि सादर नमन ...

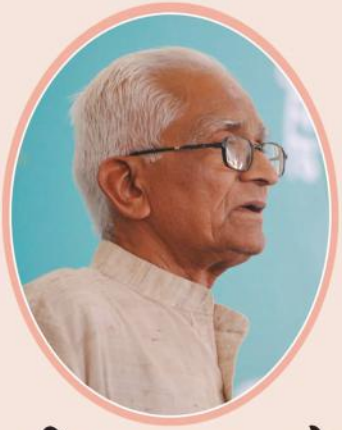

हमें प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए। जितने की हमको आवश्यकता है उससे तनिक भी ज्यादा नहीं। इस नर्मदा ने हमारे दादा, परदादा और परदादा के परदादा और कई परदादाओं की प्यास बुझाई लेकिन क्या यही नर्मदा हमारे बच्चों के बच्चों की प्यास बुझा पायेगी।

स्व. श्री अमृतलाल वेगड़

3 अक्टूबर 1928 - 6 जुलाई 2018

नर्मदा समग्र

का त्रैमासिक प्रकाशन

वर्ष : 13 | अंक : 49

माह : जुलाई - सितम्बर 2023

संस्थापक संपादक : स्व. अनिल माधव दवे

संपादक : कार्तिक सप्रे

संपादकीय मण्डल : डॉ. सुदेश वाघमारे

संतोष शुक्ला

आकल्पन : संदीप बागड़े

मुद्रण : नियो प्रिंटर्स, 17-बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल

सम्पर्क : 'नदी का घर'

सीनियर एम.आई.जी.-2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल-462016

E-mail : narmada.media@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17-बी, सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल से मुद्रित एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-2 अंकुर कालोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित

संपादक : कार्तिक सप्रे। फोन : 0755-2460754

@narmadasamagra @narmada_samagra

@narmadasamagra @narmadasamagra

@narmadasamagra www.narmadasamagra.org

इस अंक में .....

लहरी बाई जुनून की कहानी

1. संपादकीय 05

2. पर्यावरण की दृष्टि से एक सार्थक पहल... 07

3. एक अभियान जो बन गया है अब आंदोलन 16

4. लहरी बाई के जूनून की कहानी 19

5. तवा और उसकी सहयोगी नदियां... 22

6. आध्यत्मिक ऊर्जा का केंद्र है, महेश्वर... 24

7. माँ नर्मदा की पंचकोसी यात्रायें 27

8. भारत का प्रथम नर्मदा परिक्रमावासी ... 30

9. नर्मदा अंचल के वृक्ष - चन्दन, संदल 37

10. नदी एम्बुलेंस बनी वरदान... 39

11. बाढ़ प्रभावितो के बीच नर्मदा समग्र की... 44

परम पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी 1008 श्री श्री ईश्वरानंद जी महाराज (उत्तम स्वामी जी) का रेडियो रेवा जबलपुर केंद्र पर आगमन हुआ। आपने रेडियो रेवा का अवलोकन कर समस्त कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद दिया, साथ ही आपके मुखारविंद से रेडियो रेवा 90.8 FM के श्रोताओं के लिए संदेश भी रिकॉर्ड किया।

एमपीआईडीसी के प्रबंध संचालक डॉ. नवनीत मोहन कोठारी जी ने रेडियो रेवा के कार्यों का अवलोकन किया और रेडियो रेवा के श्रोताओं के लिये संदेश दिया।

मराठी साहित्य अकादमी (म.प्र. संस्कृति परिषद) के संचालक श्री उदय परांजपे रेडियो रेवा स्टेशन पधारें। आपने हिन्दी और मराठी में रेवा रेडियो के श्रोताओं के लिए संदेश दिया। आपने कई मूल्यवान सुझाव भी दिये।

जुलाई-सितम्बर के इस अंक को आप 'पावस अंक' भी कह सकते हैं। जुलाई के प्रथम सप्ताह में हमारे यहां 'वन महोत्सव' मनाने की परम्परा है। आकाश से झरती वर्षा की बूंदे समाज को स्मरण कराती हैं कि यदि धरा पर वन रहेंगे तो ही हम बरस पायेंगे। इसलिये यह ऋतु वसुन्धरा का वृक्षों से श्रृंगार करने का उत्सव है। पौधे का मूल मंत्र यानि 'रूट-सिस्टम' इस मौसम में सर्वाधिक वृद्धि करता है। लगभग तीन-चार माह की इस अवधि में पौधों की देखभाल करने की अधिक आवश्यकता नहीं होती। बस खरपतवार हटाइये और पौधा स्वयं बढ़ता है। यह सृष्टि के नवीनीकरण का मौसम है। शाकीय औषधीय पौधों की उत्पत्ति और वृद्धि का भी यही समय है। ऐसी कहावत है कि वृक्षारोपण का पहला सबसे अच्छा अवसर आज से बीस वर्ष पहले था। दूसरा सबसे अच्छा अवसर इस वर्षा ऋतु में है।

वन-प्रान्त में बहुत से पुष्प खिलकर अपनी सुगन्ध बिखेरते हैं और अपरिचय की गहराइयों में खो जाते हैं। कभी-कभी कोई पारखी नजर उनकी सुवास को जग-जाहिर कर देती हैं। नर्मदा क्षेत्र में बसी लहरी बाई भी जंगल का वह फूल है जिसकी सुगंध पूरे भारत में फैल गई है। बैगा जाति की गौरव इस महिला ने अपने परिश्रम, स्वाभाविक प्रतिभा और प्रकृति प्रेम से मोटे और छोटे अनाज की लगभग 25 प्रजातियों का संग्रहण, संरक्षण एवं संवर्द्धन किया है जिससे बाकी दुनिया अंजान थी। ऐसी न जाने कितनी लहरी बाई प्रसिद्धि एवं पहचान से दूर नेचर वालंटियर की तरह सुदूर क्षेत्रों में कार्यरत है। नर्मदा समग्र के अनुरागी लहरी बाई तक पहुंच और उनका इन्टरव्यू लिया जा इस अंक में समाहित है।

नर्मदा को सदानीरा उसकी सहायक नदियां बनाती हैं। वे बड़े परिश्रम से पानी की रजत बून्दों को अपने अमृत कलश में समेट कर लाती हैं और विनम्रता से नर्मदा में उड़ेल देती हैं। उनका नाम और काम वहीं समाप्त हो जाता है। परन्तु इन सहायक नदियों की देखभाल कौन कर रहा है। समाज, समुदाय या शासन। शायद सब। शायद कोई नहीं। इस बार दक्षिण तट की एक बड़ी सहायक नदी तवा के बारे में नर्मदा समग्र के कार्यकर्ता रोचक जानकारी लेकर आये हैं।

नर्मदा समग्र की एक विनम्र शुरूआत 'आओ बनायें माटी के गणेश' अब प्रदेशव्यापी हो गई है। उदान्त परम्परायें ऐसे ही प्रारंभ होती हैं। एक व्यक्ति के सोच को जब समाज अपनाता है तो वह आन्दोलन बन जाता है। इसीलिए गणेश वन्दना में कहा गया है -

मूकं करोति वाचालम् , पंगुम लंल्यते गिरिम,
यह कृपा तम ह्म बन्दे, परमानंद माधवम।

नदी का घर - गणेश चतुर्थी एवं अनंत चर्तुदशी

पर्यावरण की दृष्टि से एक सार्थक पहल - मिट्टी के गणेशजी

अर्पिता कार्तिक सप्रे
(लेखक - नर्मदा समग्र कार्यकर्ता।)

मूर्ति की सुंदरता से बडी है उसकी शुद्धता, आकार से बडी है आराधना।

छत्रपति शिवाजी के गुरू समर्थ रामदास ने अपने प्रायः सभी ग्रंथों में गणेश की स्तुति की है। उनके 'मनाचे श्लोक' इस उद्‌बोधनात्मक काव्य ग्रंथ की शुरूआत 'गणाधीश जो ईश सर्व गुणांचा। मुलारंभ आरंभ तो निगुर्णांचा।' जैसे शाब्दों से कर गणेशजी का गुणगान उनकी गणेश भक्ति का ज्वलंत प्रमाण है। शिवाजी स्वयं भी गणेशजी की महिमा से प्रभावित थे। तभी तो उन्होंने अपने प्रत्येक छोटे बड़े गढ़ और किले के मुख्य द्वार पर 'संग्रामे संकटेचैव' रक्षा करने वाले विघ्न विनाशक विनायक की मूर्ति की स्थापना करना उचित समझा था। पेशवाओं के संबंध में भी ऐतिहासिक तथ्य है कि वे गणपति के उपासक थे। उनके शासनकाल में गणेशोत्सव को और अधिक व्यापक और भव्य स्वरुप प्राप्त हुआ। वास्तव में गणेश पूजन को निजी देवालयों से निकालकर सार्वजनिक देवालयों में महत्व प्रदान करने का कार्य छत्रपति शिवाजी ने किया था। पुणे के कस्बा पेठ स्थित गणेश मंदिर की संस्थापिका शिवाजी की मातोश्री जीजाबाई थी। इसी प्रकार आंबवडे के पास में भी गणेश मंदिर की स्थापना शिवाजी ने की थी।

श्रीगणेश इस देवता की पूजा अर्चना महाराष्ट्र के घर-घर में व्यक्तिगत रुप से बहुत लंबे समय से चली आ रही थी। श्री गणेश विघ्नहर्ता के रुप में सभी पूजाओं तथा धार्मिक समारंभों में उन्हें अग्रपूजा का सम्मान प्राप्त है। वे सभी विद्याओं के नायक हैं। ऐसा होने पर भी 1893 तक गणेश भक्ति को सार्वजनिक रुप नहीं दिया गया था। श्रीगणेश पूजा को श्री लोकमान्य तिलक की प्रेरणा और नेतृत्व द्वारा सार्वजनिक स्वरुप दिया गया।

सन 1892 में पुणे के सरदार नाना साहेब खासगीवाले ग्वालियर गए थे; वहां गणेशोत्सव सार्वजनिक स्वरुप में, दरबारी ठाट-बाट से होते हुए उन्हें दिखा। इस पर पुणे में भी सार्वजनिक गणेशोत्सव समारोहित किया जाए इस कल्पना की उत्पत्ति हुई। सन1893 ई. में श्री खासगीवाले, घोडवडेकर और श्री भाऊ रंगारी द्वारा तीन सार्वजनिक गणेशोत्सव गणेशजी की स्थापना कर समारोहित होने लगे। सार्वजनिक गणेशोत्सव की यह कल्पना लोकमान्य तिलक के मनोमस्तिष्क में पैठ गई और उन्होंने इसे पुरस्कृत करने करने की ठानी, विंचूरकर के वाडे में सन 1894 में सार्वजनिक गणपति की स्थापना की। अस्त-व्यस्त होता जा रहा हिंदू समाज संगठित हो और स्वतंत्रता आंदोलन में एक कदम आगे बढे इस उद्‌देश्य से लोकमान्य तिलक ने सार्वजनिक गणेशोत्सव का प्रचार किया। स्वराज्य लोकमान्य का ध्येय था और जनजागृति उसका एक साधन था। जनजागृति करने

के लिए उन्होंने केसरी वर्तमान पत्र निकाला था। पुणे में जो गणेशोत्सव व्यक्तिगत रुप में मनाया जाता था उसे सार्वजनिक स्वरुप सरदार कृष्णाजी काशीनाथ उर्फ नानासाहेब खासगीवाले ने भले ही दिया हो फिर भी उसे बडे पैमाने पर ज्ञानसत्र का स्वरुप देने का सम्मान लोकमान्य तिलक को ही है।

लोकमान्य तिलक ने गणेशोत्सव का प्रारंभ मोहल्लों, गांवों व नगरों में रहनेवाले युवाओं में सृजनात्माक व राष्ट्रीयता पैदा करने के लिए किया था न कि किराये के बाजारु नाच-गानों के लिए अथवा फूहड कैसेट बजाकर मनोरंजन के लिए। आईए- लोकमान्य तिलक की भावना का सम्मान कर संकल्प करें- घर के गणेशजी घर के बाल-गोपाल व युवा ही बनाएंगे, गणपति उत्सव के विभिन्न कार्यक्रम मोहल्ले के युवक-युवती ही करेंगे।

इन ध्येय वाक्यों को लेकर संस्था 'नर्मदा समग्र' ने पिछले दस वर्षों से एक अभियान चला रखा है कि- ''अपने हाथों निर्मित मिट्टी की मूर्ति स्थापित करें'' और पर्यावरण सरंक्षण में अपना योगदान प्रदान करें। साथ ही संस्था यह भी अपील करती है कि मूर्ति में प्राकृतिक रंगों का उपयोग हो।

उपर्युक्त विचारों को दृष्टिगत रखते हुए नर्मदा समग्र विगत 12 वर्षों से आओ बनाए अपने हाथों अपने श्रीगणेश कार्यक्रम, नर्मदा किनारे के विभिन्न स्थानों पर कार्यकताओं के साथ मिलकर अमरकंटक से भरुच तक मिट्टी से मूर्ति बनाने का प्रशिक्षण कार्यशाला के माध्यम से आयोजित करते आ रहा है।

हर वर्ष हजारों की संख्या में बच्चे, वयस्क, महिला, पुरुष, आदि कई सामाजिक संगठनों, शैक्षणिक संस्थानों, आवासीय परिसर के लोग मिट्टी के गणेशजी बनाने का प्रशिक्षण लेते हैं और बनाकर साथ ले भी जाते हैं। स्व. अनिल माधव दवे जी द्वारा शुरू किया यह अभियान एक बडा रुप धारण कर चुका है और अब यह जन-जन का अभियान बन चुका है।

नर्मदा समग्र.द्वारा केवल मूर्ति बनाने का प्रशिक्षण ही नहीं दिया जाता साथ ही विसर्जन हेतु लोगों को जागरुक करने का कार्य भी बड़े स्तर पर किया जाता है। घर पर ही मूर्ति विसर्जित हो और वह मिट्टी घर के बगीचे या किसी गमले में पुनः उपयोग में लाई जाए तथा उसमें कोई पौधा लगाया जाए इस प्रकार का आग्रह भी किया जाता है। साथ ही जन सहयोग से और स्थानीय प्रशासन के सहयोग से विसर्जन कुंड भी बनाए जाते हैं जिसके कारण मूर्तियां सीधे नदी में विसर्जित न हों। वस्तुतः किसी संस्था या व्यक्ति द्वारा इस प्रकार के अच्छे समाजोपयोगी प्रेरणास्पद कार्य न केवल समाज को योग्य दिशा देने का कार्य करते हैं बल्कि नकारात्मकता को हटाकर सकारात्मक दिशा में बढने का संबल भी प्रदान करते हैं। □

श्री गणेश व दुर्गा प्रतिमा स्थापना व विसर्जन के पूर्व विचार करें ...

1. पूजा में प्लास्टर आफ पेरिस जैसे व रासायनिक रंगो का प्रयोग क्या शास्त्र सम्मत है?
2. रंगबिरंगे रसायनों से बनी मूर्तियां अच्छी दिखती हैं, लेकिन नदी, तालाब व कुओं के लिए जहर है।
3. मूर्ति की सुंदरता से बडी है उसकी शुद्धता, आकार से बडी है आराधना।
4. पीओपी की मूर्तियों का पानी में घुलना कठिन होता है, इसलिए उनका सम्मानजनक विसर्जन नहीं होता।
5. पूजा में शास्त्रोक्त मूर्तियां ही स्थापित करें, जैसे मिटटी, पत्थर, पीतल, तांबा, सोना, चांदी या मिश्रित धातु से बनी।
6. रासायनिक मूर्तियां अपने आंगन में बाल्टी या कोठी में विसर्जन कर उसकी गाद व दूषित पानी अपने आंगन के एक पौधे में डालकर उसका दुष्प्रभाव स्वयं देखें।
7. क्या हम नदी, ताालाब व जल स्त्रोतों को उतना ही साफ रख सकते हैं, जितना हम अपने घर को रखते हैं?

मिट्टी के गणेश का गमलों में विसर्जन कीजिए, वे सदैव आपके पास होंगे

पीओपी से बनी गणेश प्रतिमाएं पानी में मिलकर उसको प्रदूषित करती हैं। इस पानी में जीव भी रहते हैं. उनके शरीर को भी पीओपी नुकसान पहुंचाती हैं। जीवों से फिर मानव शरीर में प्रवेश कर जाते हैं मानव शरीर को भी नुकसान पहुंचता है। पीओपी के गणेश जी को सजाने के लिए रंगों का प्रयोग किया जाता है जो रसायन से तैयार होते हैं। विसर्जन के बाद ये रंग पानी में घुलकर पानी का प्रदूषित करते हैं और जल के जीवों को नुकसान पहुंचाते हैं। मिटटी प्राकृतिक है, प्रकृति से मिली चीजें पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचाती है। कोर्ट में एक केस के माध्यम से यह कहा गया कि मूर्तियों का विसर्जन करने के लिए कुंड बनाए जाएं। तब से भोपाल में अनेक स्थानों पर विसर्जन के लिए कुंड बनाए गए। इसी के साथ नर्मदा समग्र संस्था ने भी मिट्टी के गणेश जी की प्रतिमा बनवाई जा रही है। इसके लिए स्कूल कॉलेज में जागरूकता फैलाई जा रही है। मिटटी की बनी प्रतिमाओं का विसर्जन गमले या बगीचे में करना चाहिए जिससे इसमें पौधे तैयार हो सकें। इस तरह गणेश जी सदैव आपके पास रहेंगे।

ओम शंकर श्रीवास्तव,
एडवोकेट, राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण के पैनल में शामिल सदस्य

33 कोटि देवी देवता प्रकृति के रूप में आए

परंपरागत तौर पर बनने वाली मूर्तियां मिट्टी, रूई, बांस की खपच्चियाँ और प्राकृतिक रंगों से बनाई जाती थीं। आज इनकी जगह प्लास्टर ऑफ पॅरिस, लोहे की सलाखों, पॉलीस्टर कपड़ों, प्लास्टिक, सिंथेटिक पेंट और कई अन्य सजावटी - दिखावटी सामानों ने ले ली है। पीओपी से बनी प्रतिमाएं न सिर्फ जलीय जीव जंतुओं के लिए खतरा हैं बल्कि वातावरण भी दूषित करती हैं। 33 कोटि देवी देवता प्रकृति के रूप में आएं ताकि मनुष्य प्रकृति का सम्मान कर सके। आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और व्यावहारिक कारणों से भारतीय मनीषियों ने भगवानों के वाहनों के रूप पशु- पक्षियों को जोड़ा है।

यह भी माना जाता है कि देवताओं के साथ पशुओं को उनके व्यवहार के अनुरूप जोड़ा गया है। अगर पशुओं को भगवान के साथ नहीं जोड़ा जाता तो शायद पशु के प्रति हिंसा का व्यवहार और ज्यादा होता। भारतीय मनीषियों ने प्रकृति और उसमें रहने वाले जीवों की रक्षा का एक संदेश दिया है। हर पशु किसी न किसी भगवान का प्रतिनिधि है, उनका वाहन है, इसलिए इनकी हिंसा नहीं करनी चाहिए। हर भगवान का एक वाहन होता है । किसी का शेर, किसी का गरुड़ तो किसी के बैल। यानि सभी अपने आप में विशेष। शेर यानी शक्ति का, गरुड़ यानी मन से भी तेज गति वाला वाहन और बैल यानी अटूट श्रद्धा रखने वाला भक्त। अतः मिट्टी से ही निर्मित भगवान गणेश की प्रतिमाओं को विराजित कर हर्षोल्लास के साथ त्योहार को मनाएं।

डॉ. सुदेश वाघमारे,
रिटायर्ड ऑफिसर, स्टेट फारेस्ट सर्विस

मिट्टी में समाए हैं पंचतत्व और 7 चक्र

मिट्टी से बनी प्रतिमा में पंच तत्व समाए और आकाश, पांचों तत्वों से ही हमारा शरीर की गणेश प्रतिमा बनती है इसलिए मूर्ति की कफ दोष. कफ का ढाँचा आमतौर पर बड़ा होता और एक बड़ी, मजबूत हड्डी संरचना के साथ होता है। कफ शरीर में आसानी से वजन बढ़ने शारीरिक संरचना हृष्ट-पुष्ट है और उनका खान-

हुए रहते हैं। मिट्टी यानी पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि बनता है और इन पंच तत्वों से मिलकर ही मिट्टी प्रतिमा श्रेष्ठ रहती है। तीन दोष हैं वात, पित्त और है। जिनका बात दोष होता है वह गोलाकार जोड़ों कॉम्पैक्ट और अच्छी तरह से विकसित प्रतीत की प्रवृत्ति होती है। इसलिए भगवान गणेश की पान भी मिष्ठान है। इसी के साथ हमारे अध्यात्म में सात चक्र होते हैं। गणेश भगवान हमारे शरीर में मौजूद सात चक्रों में से पहले चक्र मूलाधार के देवता हैं। कुंडलिनी जागरण गणपति की आराधना से ही संभव होती है। कहते हैं जहां बुद्धि और विवेक हो, वहां अमंगल नहीं होता। गणेश बुद्धि और ज्ञान के देवता हैं। इसलिए जहां मंगल की कामना हो वहां पहले गणपति को बुलाया जाता है। श्रीगणेश का ध्यान करने मात्र से कुण्डलिनी जग कर (प्रबुद्ध होकर) स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्ध एवं आज्ञा चक्र में प्रविष्ट होकर सहस्त्रार चक्र में परमशिव के साथ जा मिलती है जिसका अर्थ है सिद्धियों की प्राप्ति विद्यार्थियों को गणेश जी का विशेष पूजन करना चाहिए जिससे उनको बुद्धि और मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

डॉ. प्रदीप त्रिपाठी,
पारंपरिक जड़ी-बूटियां विशेषज्ञ, प्राकृतिक चिकित्सा

आओ बनायें अपने हाथों अपने श्री गणेश - 2023

'आओ बनायें अपने हाथों अपने श्री गणेश' की प्रतिमा, प्रशिक्षण कार्यशाला का भोपाल संभाग आयुक्त, डॉ पवन कुमार शर्मा जी ने अवलोकन किया और नर्मदा समग्र न्यासी एवं विधायक श्री विष्णु खत्री ने साथ में औपचारिक शुभारंभ दीप प्रज्वलन कर किया। संभाग आयुक्त ने माटी से मूर्ति निर्माण एवं 'गोमय गणेश' के विषय रुचि पूर्वक जानकारी ली एवं बच्चों से बातचीत की। माटी गणेश जी के साथ नर्मदा समग्र की अन्य गतिविधियों के से भी अवगत कराया गया जिसकी कमिश्नर ने सराहना की। कार्यक्रम के दौरान नर्मदा समग्र के मुख्य कार्यकारी नर्मदापुरम भाग समन्वयक, परिक्रमा आयाम प्रमुख, नदी अनुरागी, मैकल नेचरल फाउंडेशन के एवं अन्य कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे।

नर्मदा समग्र द्वारा हर वर्ष की तरह इस बार भी 'आओ बनाये अपने हाथों अपने श्री गणेश' जी की प्रतिमा निर्माण की निःशुल्क प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। विगत 12 से भी अधिक वर्षों से यह आयोजन किया जा रहा है। केवल 'नदी का घर' पर ही नहीं अपितु नर्मदा जी के उद्गम से संगम तक विभिन्न घाटों/ग्रामों में, विद्यालयों/महाविद्यालयों में माटी गणेश बनाने की विधि प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं द्वारा निःशुल्क सिखायी जाती है। माटी गणेश के साथ बीज गणेश जैसे विषयों को भी नर्मदा समग्र द्वारा प्रसारित किया गया है, और जैव-विविधता बोर्ड के साथ मिलकर बीज गणेश को लेकर कई आयोजन पूर्व में भी हुए। इस वर्ष एक नयी पहल के साथ सेवा भारती से जुड़े गोबरशिल्प समूह के सदस्यों द्वारा कार्यशाला में 'गोमय गणेश' प्रतिमा बनाने की प्रक्रिया से भी अवगत कराया गया। 8 से 18 सितंबर 2023, प्रतिदिन सायं 5 से 7 बजे तक, भोपाल के शिवाजी नगर में स्थित 'नदी का घर', में आयोजित हुई। इन 10 दिनों में संस्था द्वारा विभिन्न कॉलोनियों में, सोसायटियों में, विद्यालयों/महाविद्यालयों, कुछ कंपनियों के कार्यालयों में भी जाकर प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

इस वर्ष मूर्ति प्रशिक्षण

भोपाल	1256	महाकौशल भाग	381
मालवा निमाड़ भाग	565	नर्मदापुरम भाग	400

श्री गणेश मूर्ति प्रशिक्षण "नदी का घर" भोपाल

श्री गणेश मूर्ति प्रशिक्षण मालवा -निमाड़ भाग

श्री गणेश मूर्ति प्रशिक्षण नर्मदापुरम भाग

श्री गणेश मूर्ति प्रशिक्षण महाकौशल भाग

एक अभियान जो बन गया है अब आंदोलन

अनिल अग्रावाल
(लेखक - भाग ठोली सदस्य नर्मदापुरम, नर्मदा समग्र व्यास।)

कोई भी शुभकार्य या लोक हितेषी कार्य अच्छे मन और भाव से आंरभ किये जाते है तो उसके परिणाम समाज के सामने सकारात्मक ही आते है। नर्मदा समग्र द्वारा आयोजित ''आओ बनायें अपने हाथों अपने श्री गणेश'' मूर्ती प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण कि गतिविधियों को ध्यान में रखते हुये बनाया गया है जिसका का मूल भाव नदीयों, तालाबों एवं जलशयों को संरक्षित रखने का था। भारतीय समाज में गणेश स्थापना का धार्मिक भाव बहुत ही पवित्र रहता है। हर घर में आस्था और विश्वास के साथ लोग अपने घरों में श्री गणेश जी कि मूर्ति को स्थापित करते है लेकिन पिछले एक दशक से बाजारी करण के भाव ने आस्था के साथ चंकाचौंध का रूप ले लिया है जिसका परिणाम बाजारों में प्लास्टर ऑफ पेरिस जैसे हानिकार पदार्थो से मूर्तियों का निर्माण शुरू हो गया। बाजारीकरण और चकाचैंध की इस दौड में हर कोई एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने लगे, भक्तिभाव और आस्था का अवमूल्यन होने लगा स्थापना के बाद जब यही मूर्तियाँ नदियों और अन्य जलाशयों में विसर्जित होने लगी तो हानिकारक प्लास्टर ऑफ पेरिस से निर्मित मूर्तियां जहर का काम करने लगी और जलाशयों को प्रदूषित करने लगी नदियों, तालाबों में रहने वाले जीव जंतु इस जहर के प्रभाव से मरने लगे और जल भी प्रदूषित होने लगा।

नर्मदा समग्र जो कि मध्यप्रदेश कि जीवन दायनी रेखा माँ नर्मदा जी के संरक्षण और संवर्द्धन के लिये सतत कार्य करती आ रही है उसी अभियान के अन्तर्गत ''आओ बनायें अपने हाथों अपने श्री गणेश'' मूर्ति प्रशिक्षण कार्यशाला माँ नर्मदा किनारे स्थिति ग्रामों, नगरों और शहरों में आज भी नर्मदा समग्र, आयोजित करती आ रही है। यह एक विशिष्ट उद्देश्य को लेकर शुरू किया गया कार्य आज बहुउद्देशीय बन गया है। समाज के जरूरतमंदो को सीधा लाभ दे रहा है। ऐसी ही एक कार्यशाला जो माँ नर्मदा किनारे स्थित शहर नर्मदापुरम (होशंगाबाद) में नर्मदा नदी में पी.ओ.पी. की मूर्ति हटाने के लिये विकल्प के रूप में श्री लालाराम चक्रवर्ती नर्मदापुरम भाग समन्वयक नर्मदा समग्र द्वारा विभिन्न कॉलेजो और विद्यालयों के साथ निशक्त बच्चों को विद्यालय में प्रशिक्षण दिया गया। इसी क्रम में विद्यालय में आश्रित बच्चों को बहुत ही सरल ढंग से मिट्टी कि मूर्ति का प्रशिक्षण देकर उन्हें प्रशिक्षित किया गया और देखते ही देखते बच्चों द्वारा सच्चे भाव और आस्था के साथ अपने सामर्थ्य अनुसार मुर्ति निर्माण का कार्य करना शुरू कर दिया गया।

निशक्त बच्चों के विद्यालय में दिया गया यह प्रशिक्षण मील का पत्थर साबित हुआ। जब समाज के ऐसे बच्चे जो परिवार और समाज के लिये एक विशेष जिम्मेदारी के साथ रहते हो तब

नर्मदा समग्र जो कि मध्यप्रदेश कि जीवन दायनी रेखा माँ नर्मदा जी के संरक्षण और संवर्द्धन के लिये सतत कार्य करती आ रही है उसी अभियान के अन्तर्गत "आओ बनायें अपने हाथों अपने श्री गणेश" मूर्ति प्रशिक्षण कार्यशाला माँ नर्मदा किनारे स्थिति ग्रामों, नगरों और शहरों में आज भी नर्मदा समग्र, आयोजित करती आ रही है।

उनके रहन-सहन की व्यवस्थायें सामान्य जनों से ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है और सबसे ज्यादा चुनौतियों वाला कार्य समाज की मुख्य धारा में ऐसे बच्चों को स्थापित करना होता है। इन्ही बातों को ध्यान में रखते हुये तत्कालीन कलेक्टर श्री राहुल जैन जी, एडिशनल एस.पी. श्री अमृतलाला मीणा जी के विशेष सहयोग और प्रोत्सहान से बच्चों को नई दिशा में कार्य करने के लिये बल मिला।

जब बच्चों द्वारा मूर्ति निर्मित हुई तब इस भाव को समाज के सामने प्रस्तुत करने के लिये संबंधित समाज सेवियों द्वारा मंच तैयार किया गया जिसमें प्रमुख रूप से लायंस क्लब नर्मदापुरम, ऊँ सुशीला नर्मदा फॉउण्डेशन आगे आये और एक व्यवस्थित योजना बनी जिसके अंर्तगत यह तय किया गया की बच्चों द्वारा तैयार श्री गणेश जी कि मूर्तियां सच्चे भाव से बनाई गई है तो भाव तो अनमोल होते है उनका मूल्य तय करना सही नही होगा तब तय किया गया कि बच्चों द्वारा बनाई गई मूर्तियों का मूल्य निंधारित नही किया गया। जिस भाव से मूर्तियों का निर्माण हुआ है उसी भाव से समाज उसे स्वीकार करें और विक्रेता खुद ही मूर्ति का सही मुल्य तय करें जिसका परिणाम यह हुआ कि मूर्तियों को उचित दाम मिलने लगें। संबंधित विद्यालय चूंकि एक संस्था है इसलिए उसका संचालन भी आसान नहीं था उसे भी आर्थिक परेशानियों से गुजरना पड़ता है। मूर्ति निमार्ण के इस योजना से संस्था को भी आर्थिक लाभ मिलने लगा और उसकी वित्तीय व्यवस्था संभालने लगी। इस सफल कार्यक्रम को देखते हुये वर्ष 2008 से संस्था ने बच्चों के माध्यम से इस मूर्ति निमार्ण के कार्य को जारी रखा जो अनवरत आज भी निरंतर जारी है।

इस पूरे कार्यक्रम के जो सबसे महत्वपूर्ण परिणाम सामने आये वह बहुत खुशी देने वाले रहे चूंकि जिन बच्चों के माध्यम से मूर्ति निमार्ण का कार्य चल रहा है वह मानसिक निशक्त बच्चे है और वह अपना ध्यान केन्द्रित नहीं रख पाते जिसकी वजह से वह परेशान होते है अपना ध्यान स्वयं नही रख पात। ऐसे में मूर्ति निमार्ण का कार्य उनके लिये एक दवाई का काम करने लगी और मष्तिस्क एकाग्र करने में यह मूर्ति निमार्ण का कार्य एक हेल्दी थेरेपि का कार्य करने लगी जिसका परिणाम यह हुआ कि बच्चों के दिमाग स्थिर रहने लगे वह एकाग्रता पाने लगे जो कि संस्था और परिवार के लिये खुशी की बात थी। इस कार्य से जो लाभ दिखने लगे तो संस्था ने एक कदम और आगे बडाते हुये बची हुई शेष मिट्टी से दिपावली के लिये दिये, लक्ष्मी जी कि मूर्ति, नर्मदा जंयती पर आटे के दियो का निमार्ण संस्था द्वारा बच्चों से बनवायें जाने लगे जिससे बच्चों को लाभ मिलने लगा।

स्व. श्री अनिल माधव दवे जी और नर्मदा समग्र द्वारा पर्यावरण संरक्षण के विचारों को वास्तव में भविष्य विद्यालय नर्मदापुरम, लायंस क्लब नर्मदापुरम एवं ऊँ सुशीला नर्मदा फॉउण्डेशन द्वारा जीवंत रखा। □

नर्मदा जी अथवा अपने समीप किसी छोटी धारा, सहायक नदी या स्थानीय महत्व का जलस्रोत के जल को साक्षी मानकर संकल्प करें जल संरक्षण का। अपने द्वारा रोपित पौधों को रक्षा सूत्र बांध कर उनका संरक्षण करें।

लहरी बाई के जूनून की कहानी

नीलेश कटारे

(लेखक - भाग समन्वयक महाकौशल, नर्मदा समग्र न्यास।)

“

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लहरी बाई के कार्यों की तारीफ करते हुए अपने ट्विटर हैंडल पर लिखा था - लहरी बाई पर गर्व है, जिन्होंने श्री अन्न के प्रति उत्कृष्ट समर्पण दिखाया है। उनके प्रयास कई अन्य लोगों को प्रेरित करेंगे।

डिंडोरी जिला मुख्यालय से लगभग 75 कि.मी. ग्राम चाडा है यह ब्लाक बजाग के अंतर्गत आता है यहाँ से 5 कि.मी. घने जंगलो के बीच और बुडनेर नदी के तट के समीप ग्राम सिलपिढी की रहनी वाली बैगा जनजाति की लहरी बाई 12 सितंबर, 2023 को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने नई दिल्ली के.सी. सुब्रमण्यम ऑडिटोरियम में आयोजित एक कार्यक्रम में डिंडोरी ज़िले की कृषक लहरी बाई को श्रीअन्न प्रजातियों के संरक्षण और संवर्धन के लिये वर्ष 2021-22 का 'पादप जीनोम संरक्षक किसान सम्मान' प्रदान किया।

यह जानकारी जब प्रिंट मिडिया पर पढी तो मन में बड़ी उत्सुकता उत्पन्न हुई कि कैसे एक जंगल में रहनी वाली महिला इस कार्य को कर रही है इन सभी विषयों को जानने समझने के लिए नर्मदा समग्र की टीम द्वारा लहरी बाई से मिलने की योजना बनाई। डिंडोरी मुख्यालय पहुँच कर जब हमने इसकी जानकारी ली तो पता चला की लहरी बाई का गाँव 80 कि.मी. घने जंगल के बीच है और वहां न तो नेटवर्क है और न ही किसी से सम्पर्क हो सकता है फिर भी हमने हिम्मत तो बांध ही ली थी, तो हम निकल पड़े लहरी बाई के गाँव के लिए जाते समय बजाग पहुँच कर हमने एक पुराने कार्यकर्ता अर्जुन वटिया से सम्पर्क किया बात हुई तो वह सहजता से तैयार हो गये। हम बजाग से निकले और ग्राम चाडा होते हुए ग्राम सिलपिढी पहुंचे जहाँ लहरी बाई का निवास था। गाँव में पूछने के बाद जानकारी मिली कि लहरी बाई तो सुबह-सुबह ही अपने खेत के लिए निकल गई है। हमें यह जान कर बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि शहर का व्यक्ति का प्रायः कार्य की शुरूआत 9:00 या 10:00 बजे शरू होती है लेकिन गाँव का व्यक्ति सुबह 4:00 बजे उठता है और सूर्य निकने के पहले ही अपने खेतो में पहुँच कर खेती के कार्य में लग जाते है यह हमारे लिए किसी आश्चर्य से कम नही था खैर चूँकि हम गाँव पहुँच गए थे तो हमें लहरी बाई के घर को देखना था। जब हम लहरी बाई के घर पहुंचे तो चकित रह गए छोटा सा दो कमरे का घर जिसकी छत घास फुंस से बनी हुई घर के अन्दर अगर प्रवेश करना हो तो झुक कर जाना पड़े ऐसी परिस्थित में रहने वाली बैगा जनजाति की एक 27 वर्षीय महिला श्रीअन्न प्रजातियों के संरक्षण और संवर्धन के लिये इतनी जागरूक हो कर कार्य कर रही है अब तो हमारी उत्सुकता और भी बढ़ गयी लेकिन थोड़ी ही देर में पानी का मौसम बन गया और तेज वर्षा शुरू हो गई पानी से बचने के लिए छुपते छुपाते नजदीक के एक प्राथमिक शाला में हमने शरण ली।

यहाँ के शिक्षक से हमने पूछ की हमें लहरी बाई से मिलना है। शिक्षक ने हमसे कहाँ की यहाँ के लोग सुबह जल्दी उठ कर अपने खेत चले जाते है और लौटते हुए शाम हो जाती है लहरी बाई के दो अलग-अलग स्थान, जंगल के अन्दर खेत है वहां जाने का रास्ता भी नहीं है में आपको बता भी दूँ तो आप लोग नहीं पहुँच पायेगे। जंगल में रास्ता भटक सकते है और आपको रास्ता बताने वाला व्यक्ति नहीं मिला तो आपको समस्या हो सकती है लेकिन हमने तय किया था की इतनी दूर आने के बाद हम बिना मिले तो नहीं जायेगे शिक्षक से बात करते हुए हमारे साथ अर्जुन जी ने खेत जाने वाले रास्ते की पूरी जानकारी ली और हम चल पड़े जंगल के किनारे के खेत में, जब हम पहुंचे तो एक बुजुर्ग और एक महिला बुजुर्ग अपने खेत में काम करते हुए दिखाई दिए उनसे हमने जब पूछा कि लहरी बाई के खेत कौन सा है तो जबाव आया यही है इतना परिश्रम कर हम इनके इस खेत तक पहुंचे थे तो मानो खुशी का

कोई ठिकाना ना था हमने पूछा कि आप लोग कौन है और लहरी बाई कहाँ है हम बहुत दूर से मिलने आये है और अपना परिचय बताया तो उन्होंने बताया की हम लहरी बाई के माता-पिता है, इनको देख कर हमारे रोम खड़े हो गये मानो हमारे पास कोई शब्द नहीं थे इसके पीछे का कारण इन दोनों बुजुर्ग की अवस्था थी।

दोनों की उम्र को देख कर लग रहा था की इतनी अधिक उम्र होने के बाबजूद कोई इतनी सुबह से खेतो में आ कर काम कैसे कर लेता है क्योकि हम तो शहरो में निवास करते है हमारी सुबह तो 8:00 बजे के पहले नहीं होती और इनको देखकर आश्चर्य हो रहा था, परन्तु यह सब आँखों के सामने था हमने पूछा उसके पहले ही लहरी बाई की माता जी चेती बाई और पिता सुखराम ने बताया की लहरी बाई उनके दूसरे खेत जो कि बुडनेर नदी के किनारे है वहां के खेत में काम करने गई है अब तो हमारे लिए बड़ी समस्या खड़ी हो गई, क्योकि इनके इस खेत तक पहुंचना ही हमारे लिए कठिन था और अब हम इस बड़े जगंल में दूसरा खेत कैसे खोजेगे फिर भी हमारे साथ अर्जुन जी ने हौसला बंधाया और हम वहां से आगे बढे आगे घने जंगलो के बीच से बुडनेर नदी के किनारे के लोगो से पूछते हुए हम आगे बढ़े लेकिन आगे जाने के बाद हमें रास्ता बताने वाला कोई व्यक्ति नहीं मिल रहा था।

बुडनेर नदी के दूसरे तट जंगल किनारे कुछ महिलाएं खेत में काम कर रही थी। लेकिन दूरी अधिक होने के कारण हम यह नहीं समझ पा रहे थे कि

इनमे से जो काम कर रही महिलायें है उसमे से एक लहरी बाई है या नहीं दूसरा संकट हमारे सामने यह खड़ा था कि इनसे पूछने के लिए हमें बुडनेर नदी को नक कर जाना था लेकिन इस घने जंगल में हमें कोई और बताने वाला नहीं था की लहरी बाई का खेत कौन-सा है और नदी का बहाब भी तेज था गहराई का अनुमान भी हमें नहीं था यही विचार मन में लगातार चल रहा था। इतने में हमारी नजर कुछ दूर नदी में नहाते छोटे-छोटे बच्चो पर पड़ी। हम जैसे ही उनके नजदीक जाने लगे सभी बच्चे अपने कपडे छोड़ कर जंगल की तरफ डर कर भाग गए। अब हमारे पास दूसरा कोई रास्ता नहीं बचा जिससे जानकारी ली जा सके। तब हमने निर्णय लिया कि जैसे भी हो नदी तो पार करके ही रहेगे और कहते हैं कि जब आप हिम्मत बांध लेते है तो भगवान भी आपका साथ देता है। हम जैसे-तैसे नदी पार कर खेत में काम कर रही महिलाओं के पास पहुंचे हमने पूछा की लहरी बाई का खेत यही है क्या? जबाव आया हाँ, तब हमें लगा कि हमारा परिश्रम व्यर्थ नहीं गया लहरी बाई को देख कर यह नहीं लग रहा था की एक साधारण महिला इतना असाधारण कार्य कर रही है।

लहरी बाई से परिचय बताया कि हम लोग नर्मदा समग्र के कार्यकर्ता है और जल एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए काम करते है यह सुन कर लहरी बाई बहुत प्रसन्न हुई और उनका कहना था की जैसे आप लोग काम कर रहे है और मैं अकेली लहरी बाई इतना कर सकती हूँ तो और भी लोगो को जल, जंगल और जमीन की सुरक्षा के लिए काम करना चाहिए आज एक लहरी बाई है ऐसे और लहरी बाई बनना चाहिए।

लहरी बाई ने बताया की बीज बैंक बनाने के लिये लहरी बाई ने दस साल तक कई गाँव की खाक छानी है। साथ अपने बुजुर्गो द्वारा मिली जानकारी के द्वारा करीब 25 प्रकार के मिलेट क्राप्स बीज का संग्रहण किया है। मिलेट क्राप्स मोटे अनाज वाली फसलों को कहा जाता है जिसमें ज्वार, बाजरा, कोदो, कुटकी, साँवा, रागी, कुट्टू और चीना आदि अनाज आते है। मिलेट क्राप्स को सुपरफूड भी कहा जाता है क्योंकि इनमे पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं. आपको जानकर हैरानी होगी कि लहरी बाई कभी स्कूल नहीं गई लेकिन आज देश और विदेश के लोगो को अपने काम से प्रेरित कर रही है, हमें भी लहरी बाई से मिलकर नई ऊर्जा का संचार हुआ। □

तवा और उसकी सहयोगी नदियां नर्मदा नदी के परिवार के सदस्य

नवीन बोड़रे
(लेखक - भाग समन्वयक नर्मदापुरम, नर्मदा समग्र न्यास।)

मध्यप्रदेश की जीवन दायनी नदी के बारे में तो हम सभी जानते है कि मां नर्मदा का प्रादुर्भाव कब से हुआ और आज तक वह अनवरत हमें जल प्रदान कर सभी को जीवनदान दे रही है। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र एवं गुजरात से होकर बहने वाली यह नदी अपने आंचल में कई सदियों की कहानियों को अपने में समेटी हुई है। नर्मदा नदी अपने आप में एक जीवंत इकाई है जिसे अक्सर स्व. श्री अनिल माधव दवे अपने विचारों से प्रकट किया करते थे। जिसके किनारों पर कई सभ्यताओं ने जन्म लिया और आज भी जीवित है। अमरकण्ठक से भरूच (गुजरात) तक कई भाषा बोली की जन्मदात्री है मां नर्मद। नर्मदा नदी की कुल लंबाई 1312 किमी है जिसमें कई सहयोगी नदी भी अपना जल प्रदान करती है और मां नर्मदा नदी के प्रवाह को निरतंर बनायें रखती है।

नर्मदा नदी के दोनों तटो पर प्रमुख रूप से 41 छोटी बड़ी नदीयां आकर मिलती है जिसके उत्तर तट पर 19 और दक्षिण पर 22 नदियाँ मिलती है। प्रमुख रूप से इन्हीं सहयोगी नदियों में से एक तवा नदी नर्मदापुरम (होशंगाबाद) जिले के दक्षिण तट पर बान्द्राभान घाट पर आकर मिलती है।

तवा नदी का उद्गम छिंदवाडा जिले के ग्राम महदाबीर हरियागढ से इसका उद्गम माना गया है जिसकी लगभग लम्बाई 117 कि.मी. है। तवा नदी इस यात्रा और सतपुड़ा के घनें जंगलो में से निकले वाली कई छोटी और ऋतु अनुरूप नदियां तवा को अपना जल प्रदान करती है।

जैसे ही तवा नदी के गोद में हम अपने कदम आगे बढ़ाते है वैसे ही कई छोटी नदियों का परिचय और दर्शन हमें होता है इन छोटी नदियों के अपने नाम और कहानियां है जो हमें सुनने और जानने को मिलती है। इन्हीं में से कुछ नदियाँ मेरे प्रवास के दौरान मुझे देखने को मिली जिसके बारे में मुझे जानने को मिला हर नदी के आस-पास रहने वाला समाज उसे अपने क्षेत्र की गंगा के समान समझता है। उसके लिये उस नदी का महत्व अन्य नदियों के तुलना में अधिक होता है।

धुधियाँ - इन्ही में से एक नदी धुधियाँ है जो सतपुडा के घने जंगलो से बहती है स्थानीय ग्रामीण सुनील कहार ने बताया कि सात पहाड़ियों के बीच में से यह नदी प्रवाहित होती है। इसमें जल मौसम अनुसार रहता है वर्षा ऋतु से दिसंबर-जनवरी के कुछ माह तक इसमें जल बहता रहता है। इसकी लम्बाई लगभग 20 किलो मीटर है। इसके आस-पास देंतु, सागौन, जामून, पलास के पेडों की अधिकता पायी जाती है।

पोटिया - कुछ दूरी तय करने पर एक और नदी के दर्शन हुये जानने और देखने के लिये ठहरे स्थानीय ग्रामीण महेश दर्शिमा से चर्चा करने पर ज्ञात हुआ कि गाँव का नाम भीम सिंह ठाना भरदागढ है और निकले वाली नदी का नाम पोटिया है जो वर्षा ऋतु से फरवरी तक बहती है इसकी लम्बाई भी चर्चा में जो बताया उस अनुसार 18 से 20 किलो मीटर है। यह नदी भी सतपुडा के घनें जंगलो से प्रवाहित होती है।

कन्हान - आगे बढ़ते ही एक और गाँव में रूकना हुआ रूकना इसलिए हुआ कि एक और नदी अपने में जल लिये हुये बह रही थी जानकारी लेने के लिये एक

तवा नदी की 117 किमी की इस यात्रा और सतपुड़ा के घने जंगलो में से निकले वाली कई छोटी और ऋतु अनुरूप नदियां तवा को अपना जल प्रदान करती है। इसके क्षेत्रफल में कई जनजातीयां अपना जीवन यापन करती है। जिनका मूल स्वभाव सरल और सहज है।

ग्रामीण राजू नागवंशी से चर्चा की तो पता चला कि गाँव का नाम माण्डेइय है और बहने वाली नदी कन्हान है यह नदी लगभग 10 किलो मीटर बहती है और तवा में मिल जाती है।

हनुमान डोल नदी - एक बहुत ही सुंदर धार्मिक स्थान है हनुमान डोल मंदिर के कुछ दूर आगे से ही एक नदी पहाड़ों के बीच में से बनती है मंदिर के किनारे से बहती है तो चर्चा करने पर पता चला कि नदी को भी हनुमान डोल नदी कहते है। यह नदी भी सतपुड़ा के पहाड़ों के बीच में से छोटी-छोटी नालियों के माध्यम से बनते हुये दिखती है और एक नदी का बड़ा आकार लेती है इस नदी पर दो बड़े पुल बने हुये है इसकी लम्बाई भी 25 किलो मीटर बताई जाती है। वर्षा ऋतु में इस नदी का जल स्तर बहुत बढ़ जाता है जो तवा नदी को भरपूर जल प्रदान करती है। इसके क्षेत्रफल में छोटे महादेव (शंकर भगवान का मंदिर) है जो बहुत ही प्रसिद्ध है। यह नदी उपरोक्त नदियों के विपरित स्थान पर है। जिसका क्षेत्रफल बैतूल जिले में आता है।

इन सभी नदियों को पार करते हुये पहाड़ों और गाँवों के दर्शन करते हुये आगे बढते है तो कई लोगो से मिलना होता है जो अपने दैनिक कामों को करते हुये दिखते है उनका दैनिक कार्य पशुओं को चराना अपने खेत खलीयानों की चिंता करना होता है। हमने भी स्थानीय

ग्रामीण को अपने साथ लेकर तवा के उद्गम जाने की ओर कदम बढायें कुछ दूर पैदल चलते हुये स्थानीय ग्रामीण ने जल से भरे एक कुण्ड को बताया की यह छोटी तवा है कुण्ड के सामने दो बड़े से गोल आकार के पत्थर जमे हुये थे जिन्हें ग्रामीण लोग कछुवा और कछवीं कहते है। वह बताते हुये कहते है कि भगवान ने छोटी तवा नदी को बहने से रोकने के लिये कछुवा और कछवीं से कहा था लेकिन देव (भगवान) की बात न मानते हुये कछुवा और कछवीं ने नदी को बहने दिया इसलिए इन्हें श्राप मिला और उन्हें पत्थर का बना दिया कुण्ड के सामने एक बडा सा जल कुण्ड बना हुआ है।

कुण्ड से लगे हुये पहाड़ पर एक पुराना किला है जो खण्डहर बना हुआ है वर्तमान में बंद है। यहां से आगे बढ़ते हुये कच्चे मार्ग को पार करते हुये पगडंडियों के माध्यम से एक और गांव महदाबीर हरियागढ़ तक पहुंचे जहां पहुंच कर कुण्ड के दर्शन हुये जिसे तवा कुण्ड कहते है ओर यही से छोटी नाली के रूप में पहाड़ों के बीच में से होते हुये कुछ 3-4 कि.मी. बाद एक बड़ी नदी का आकार लेती है। तवा नदी अपने साथ सतपुड़ा के घनें जंगलो और पहाड़ों में एकत्र वर्षा का जल एवं स्वयं में संग्रहित जल को नर्मदा नदी में विसर्जित करती है तवा नदी पर दो बड़े बांध बने हुये है। जिसमें सारणी में सतपुडा बांध और नर्मदापुरम जिले के तवा नगर में तवा बांध। सारणी के सतपुडा बांध में संग्रहित जल से सारणी नगर में जल आपूर्ति के साथ वहां स्थित पावर प्लांट को जल प्रदान करती है। तवा नदी आगे बढ़ते ही अन्य छोटी सहयोगी नदियों का जल अपने में संग्रहित कर बहती है और तवा नगर में स्थित तवा बांध के रूप में सुंदर आकार लेती है। यह एक पर्यटन स्थल भी है जहाँ पर्यटक घुमने आते है।

नर्मदा नदी हो, उसकी सहयोगी तवा हो या अन्य नदियां वह अपने पूरे क्षेत्रफल में एक जीवन चक्र बसाए रहती है जिसे सिर्फ एक नदी तक सीमित रखना उसके पूर दर्शन को अधूरा देखना है। तवा के प्रवास के अगले चरण में अन्य जानकारियों के साथ। □

आध्यात्मिक ऊर्जा का केंद्र है, महेश्वर का पावन क्षेत्र

विजय जोशी 'शीतांशु'
(लेखक - संयोजन, लघु कथा शोध केन्द्र सचिव, मध्यप्रदेश लेखक संघ।)

कण-कण में शिव राजे, हर घर शिवाला लगता है।
पावन माहिष्मती का दर्शन, अमृत का प्याला लगता है।

महेश्वर नगर भारत के मध्य प्रदेश के उन्नत भू-भाग में रेवा तट पर बसा पौराणिक शहर है। जिसका नाम पौराणिक संदर्भ में माहिष्मती के नाम से विख्यात है। यह आनन्द व उत्साह की शिव नगरी है। जहाँ सप्तकल्पजयी माँ नर्मदा का नीर शिव नगरी का पाद प्रक्षालन करता है। तो प्रातः भगवान अरुणोदय शिवालयों के शिखर वंदन करता है। और, ध्वनि तरंगों में शिव मंदिरों की घण्टी व शंखनाद वातावरण में घुलकर महेश्वर की सुबह को सुरभित कर देता है।

आज महेश्वर को पर्यटन की दृष्टि व महेश्वरी साड़ी उद्योग के लिए प्रमुखता से जाना जाता है। जिसने दोनों क्षेत्र में अपनी पहचान राष्ट्रीय फलक पर स्थापित की है। एवं होल्कर राज -घराने के वंशजों के माध्यम से महेश्वरी साड़ी ने विदेशों की लंबी यात्रा कर, विदेशी वस्त्र बाजार में अपनी पेठ बनाई है।

साड़ी उद्योग का यह कारवां 350 वर्षों से निरन्तर जारी है। जब महारानी अहिल्या बाई होल्कर ने मालवा छोड़ निमाड़ के इस महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया था। और शिव भक्त, दयालु लोकप्रिय रानी अहिल्या बाई ने महेश्वर के पुनरुत्थान के लिए बुनकरों को आर्थिक सहयोग देकर बसाया। साड़ी उद्योग के लुम, हस्थ करघा लगवाएं। कुँए, बावड़ी बनवाये। मंदिरों घाटों व किले का जीर्णोद्धार करवाया।

लेकिन महेश्वर का इतिहास केवल इतना पुराना ही नहीं है। महेश्वर का अतिप्राचीन पौराणिक, धार्मिक, आध्यत्मिक, साहित्यिक सांस्कृतिक महत्वपूर्ण इतिहास है। एवं दैविक, तांत्रिक प्रभाव व महत्व भी है। जिसका उल्लेख पद्म पुराण, एवं स्कन्ध पुराण व शिवपुराण में भी मिलता है। माहिष्मती के राजा सहस्त्रबाहु का लंकापति रावण से युद्ध, युगों पूर्व भगवान परशुराम का सहस्त्रबाहु से युद्ध व वध का उल्लेख मिलता है। त्रिपुरासुर की तीनों पुरियों का संबंध भी महेश्वर से बताया जाता है। आज भी नगर के मध्य सहस्त्रबहु की कुलदेवी हींगलाज मंदिर, व पेशवा मार्ग पर भगवान परशुराम का मंदिर स्थित है।

सप्तकल्पजयी रेवा के मार्ग में विंध्याचल व सतपुड़ा की पर्वत श्रेणियों के मध्य बसा प्राचीन अनूप जनपद के नाम से विख्यात निमाड़ का प्रमुख नगर महेश्वर हर युग में आबाद रहा है। घाट-घाट शिवलिंग नन्दीश्वर, व शिवालयों की भव्यता ने इस पौराणिक नगरी को शिवमयी बना दिया है। मान्यतानुसार बारहद्वारी, बड़दख्खन मारुति मंदिर सहित प्राचीन साढे बारह हनुमान मंदिरों ने महेश्वर को काशी(वाराणसी)के समतुल्य दर्ज प्रदान किया है।

नगर के पूर्व में महेश्वरी नदी-नर्मदा संगम तीर्थ है। जो तांत्रिक आध्यत्मिक ऊर्जा का केंद्र है। जहाँ महेश्वरी नदी के दोनों ओर ऊँची पहाड़ी पर महाकालेश्वर-ज्वालेश्वर स्वयंभू शिवालय है। तो धरातल पर नर्मदा संगम के समक्ष मंगलमयी सप्तमातृका शक्तिपीठ है। यहीं चौखंडी पहाड़ी पर कदम्बेश्वर, आद्यगुरु शंकराचार्य व मॉडल मिश्र, विदुषी देवी भारती शास्त्रार्थ स्थली भी है। जो विश्व विख्यात है। चतुर्भुज नारायण मंदिर स्थापित है। चिंतामणि गणेश, खड़गासन बड़े गणेश, सिद्धिगणेश सहित अष्ट विनायक भी स्थित है। अनादिकाल से प्रज्वलित ग्यारह अखण्ड नन्दा दीपों से जगमग भगवान राजराजेश्वर मन्दिर, व विशाल शिवलिंग वाले भूत भावन भगवान

काशीविश्वनाथ मंदिर परिसर अद्भुत है। जिनमें श्रावण मास में श्रृंगार भक्तों की विशेष भक्ति व आकृषण का केंद्र है। नर्मदा की मझधार में स्थित बाणेश्वर शिवालय असुर राज बाणासुर की तपस्थली है। शिवमय नगरी के मध्य, सन्तान संस्कृति के मोक्षदायी चोरोधाम मन्दिर भी स्थापित है। जो भगवान बद्रीविशाल मंदिर, श्री द्वारकाधीश मंदिर, नर्मदा मार्ग ,काष्ठ की प्रतिमा स्थित भगवान जगन्नाथ जी व श्री रामेश्वरम मंदिर भव्यरुप में पेशवामार्ग पर विराजमान है। नगर के पश्चिम में रेवा का एक बड़ा प्राकृतिक जल प्रपात चट्टानों से निर्मित होता है। जिसमें नर्मदा सहस्त्र धाराओं में विभक्त हो जाती है। इस स्थान को सहस्त्रधारा नाम से पुकारा जाता है। यह प्राकृतिक रूप का अद्भुत नजारा है। जो ऊपर से नीचे गिरने वाले झरनों से एकदम अलग, अर्धगोलाकार में सहस्त्रधाराओं में फैला है जो निआगरा वाटर फाल की आकृति का मिनी रूप लगता है। इसी प्रपात पहुँच मार्ग पर ऊपरी पहाड़ी पर वर्तमान में नारायण सेवा संस्थान महाराष्ट्र द्वारा भव्य भगवान दत्तात्रेय जी का मंदिर बनाया गया है। जो देश के मात्र चार शहरों में ही स्थित है।

देश के अखण्ड साबुत किलों में महेश्वर का नाम सिरमोर है। जिसका निर्माण राजा महेश्वर के द्वारा पांचवीं - छटी शताब्दी में कराया गया था। 17वीं शताब्दी में देवी श्री अहिल्या बाई द्वारा जीर्णोद्धार का उल्लेख मिलता है। इस संदर्भ में 1975 में माहिष्मती प्रकाशन के

महेश्वर का इतिहास केवल इतना पुराना ही नहीं है। महेश्वर का अतिप्राचीन पौराणिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक सांस्कृतिक महत्वपूर्ण इतिहास है। पद्म पुराण, एवं माहिष्मती के राजा सहस्त्रबाहु का लंकापति रावण से युद्ध, युगों पूर्व भगवान परशुराम का सहस्त्रबाहु से युद्ध व वध का उल्लेख मिलता है।

तात्कालिक संपादक श्री बाबूलाल सेन द्वारा प्रकाशित माहिष्मती दर्शन में जिक्र किया है। नर्मदा के उतर तट पर महेश्वर नगरी व किला है। तथा सामने दक्षिण तट पर शालिवाहन शिवालय (जिनके नाम से शालिवाहन शक संवत चलता है) के आसपास नवडातोड़ी गांव में 50 से 60 के दशक में पुरातत्व विभाग द्वारा खुदाई की गई थी। जिसमें मोहन जोदड़ो व हड़प्पा संस्कृति समकालीन अवशेष मिले होने से यह शहर अति प्राचीन ऐतिहासिक क्षेत्र की श्रेणी में भी आता है। संकेत मिलते है कि यहाँ से जलमार्ग से व्यापार भी किया जाता रहा है।

ब्रम्हलीन नर्मदा भक्त श्री रविंद्र भारती जी ने शिव चैतन्य ब्रम्हाचारी बाबा का आशीष लेकर 11 भक्तों के साथ 1985 में माहिष्मती पंचकोशी यात्रा का शंखनाद किया। जो आज 35 वर्षों में 50 हजार भक्तों के जन समुदाय में परिणित हो गई है। विक्रम विश्व विद्यालय से सम्बद्ध डॉ. रविन्द भारती जी उज्जैन के अनुसार यह यात्रा देवयुग में भी पंचेशानी यात्रा के नाम से होती थी। स्कन्ध पुराण में इसका उल्लेख किया गया। भारती जी आगे बताते है कि मैने जनकल्याण सांस्कृतिक एकता के लिए यात्रा का पुनरुथान किया है। महेश्वर रेवा तट श्री मृतंग ऋषि, श्री अंगिरा ऋषि, श्री भृतहरि गुफा , जय शियाराम बाबा, जयेन्द्र पूरी काशी के परम शिष्य शिवचैतन्य ब्रम्हचारी बाबा,

दक्षिण भारत के बालब्रम्हचारी गुरुवर भक्तानन्द जी महाराज के साथ साथ कई गुप्त ऋषियों की तपस्थली रही है। यहाँ श्रावण मास में मासपारायण, कावड़ यात्राएं निरन्तर जारी रहती है। इंदौर, उज्जैन, कलकत्ता मालवा, आदि देश भर की कावड़ यात्रा के मध्य भगवान काशीविश्वनाथ की शाही पालकी व हरि हर मिलन का मनोहारी दर्शन मिलता है। विश्व की महामृत्युंजय यात्रा का द्वादश आयोजन होने का गौरव भी इस नगरी को प्रसाद रूप में प्राप्त है।, आषाढ़ी दूज पर जगन्नाथपुरी की तर्ज पर निमाड़ के जगन्नाथ यात्रा भी निकाली जाती है। अश्रय तृतीय पर भगवान परशुराम की शौर्य यात्रा हाथी घोड़े,रथ के साथ भवानी माता शक्ति द्वार से परशुराम मंदिर तक संपूर्ण शहर के मध्य से निकाली जाती है। नर्मदा जयंती, महाशिवरात्री, गणगौर जैसे पारम्परिक उत्सवों के साथ साथ राज्य शासन के शासकीय उत्सवों का भी वर्षभर बोलबाला रहता है। जिसमें निमाड़ उत्सव संस्कृतियों का मिलन उत्सव, नदी उत्सव प्रमुख है।यहाँ की साहित्यिक धरोहर भी युगों से संस्कृति के साथ साथ प्रवाहित होती रही है। आध्यत्मिक धर्म दर्शन की लेखनी का दायित्व शिव चैतन्य स्वामी ब्रम्हचारी बाबा, व बालब्रम्हचारी भक्तानन्द जी बाबा ने संभाला व वशिष्ठ कल्प, विश्वामित्र कल्प, कर्तिकवीर्य ग्रन्थावली, दशांग दुर्गा पद्धति, महाविद्या तन्त्रम, गायत्री सहस्त्र नामावली, वायु पुराण आधार पर नर्मदा रहस्य ग्रन्थों का

निर्माण किया। तो सामाजिक चिंतन के लेखन की बागडोर श्री विद्याधर टेलर साहेब,श्री लल्लूप्रसाद दुबे,श्री सोमचन्द वैद्य, श्री राजाभाऊ व्यास जी, श्री मधुसूदन उपासनी जी ने संभाली।निमाड़ की भाषा बोली को सहेजने संकलित करने का काम श्री बाबूलाल सेन जी ने माहिष्मती प्रकाशन के माध्यम से किया। निमाड़ी साहित्य का काल विभाजन किया। युवा लेखक विनोद सकुण्डे ने देवी श्री अहिल्या बाई के संपूर्ण जीवन को हिन्दी, मराठी साहित्य में ढाला। तो श्री हरीश दुबे ने नर्मदा भजनों, गीतों निमाड़ी उत्सव गीतों से, सजाया। आज उनके भक्ति गीत देश के व्यासपीठ आचार्यों के श्रीमुख से गाए जाते है। श्री चन्दकांत सेन हायकू व विजय जोशी ने सामाजिक लघुकथा लेखन से महेश्वर की साहित्यिक संवर्धन यात्रा को जारी रखा है। नृत्य, संगीत, गायन वादन, की शास्त्रीय शिक्षा का विशेष प्रबन्धन होता रहता है। महेश्वर की शास्त्रीय लोक गायिका मनीषा शास्त्री व साथी कलाकार आकाशवाणी दूरदर्शन, भारत भवन तक अपनी गायिका का जादू बिखेरते रहे है। तो भरतनाट्यम में श्री श्याम रंजन सेन गुप्ता की शिष्य नृत्यांगना निहारिका जोशी व साथी कलाकारों ने दूरदर्शन के साथ साथ प्रदेश के स्वर्णजयंती भवन में शास्त्रीय प्रस्तुतियां दी है।

इस अति प्राचीन नगरी के प्रसाद व्यंजन भी अनोखे है। शिवरात्रि पर सिघाड़े के घेवर मिष्टान की प्रसादी, तो गंगा दशहरे पर भैयडा (नमकीन) प्रसाद का भोग बड़ी मात्रा में लगाया जाता है।

दाल-बाटी, आमाड़ी की भाजी पूरनपोली यहाँ का मुख्य व्यजंन है।

आज इस शहर ने अपनी खूबसूरती से फिल्म उद्योग को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। साउथ फिल्म के साथ बड़े बेनर की फिल्म यमला पगला दीवाना, पेड़मेन जैसी फिल्मों को यह शहर रास आ गया। एक ओर विशाल जल राशि होने से अंतरास्ट्रीय जल क्रीड़ा जैसे आयोजनों की संभावनाएं बढ़ गई है। और उनको आमंत्रित किया है, केनो सलालम , तैराकी, नौका रेस, की जल क्रीड़ा के आयोजन भी होते रहते है।

आप इस अनुपम अद्वितीय अतुलनीय पौराणिक नगरी में एक बार अवश्य पधारें। इंदौर से 100 किलो मीटर पूर्व में तथा खण्डवा रेलवे जंक्शन से 120 किलोमीटर की दूरी पर यह खरगोन जिले का तहसील मुख्यालय वाला शहर स्थित है।□

माँ नर्मदा की पंचकोसी यात्रायें

लालाराम चक्रवर्ती
(लेखक - परिक्रमा आयाम समन्वयक, नर्मदा समग्र न्यास भोपाल।)

मां नर्मदा पंचकोसी लगभग 5 दिवसीय होती हैं। मां नर्मदा के किसी एक स्थान से यात्रा पैदल प्रारंभ करते हुये किसी स्थान से तट परिवर्तन कर दूसरे तट पर चलकर पुन: तट परिवर्तन कर यात्रा प्रारंभ के स्थान पहुंच जाते हैं, इस पूरी यात्रा में नर्मदा माई हमेशा दक्षिण हाथ में रहना चाहिये। इस पांच दिवसीय पंचकोसी यात्रा में प्रत्येक दिन 5 कोस अर्थात 16 कि.मी. लगभग यात्रा करते हुये 5 दिन में लगभग 80-85 कि.मी. चलना होता हैं।

पंचकोसी यात्रा क्या है ?

सामान्यतः देखा जाये तो एक कोष में करीब 3.2 कि.मी. होते हैं, तो 5 कोष में लगभग 16 कि.मी. हुयें। मां नर्मदा पंचकोषी लगभग 5 दिवसीय होती हैं। मां नर्मदा के किसी एक स्थान से यात्रा पैदल प्रारंभ करते हुये किसी स्थान से तट परिवर्तन कर दूसरे तट पर चलकर पुनः तट परिवर्तन कर यात्रा प्रारंभ के स्थान पहुंच जाते हैं, इस पूरी यात्रा में नर्मदा माई हमेशा दक्षिण हाथ में रहना चाहिये। इस पांच दिवसीय पंचकोषी यात्रा में प्रत्येक दिन 5 कोष अर्थात 16 कि.मी. लगभग यात्रा करते हुये 5 दिन में लगभग 80-85 कि.मी. चलना होता हैं।

पंचकोसी यात्रा का महत्व

विश्व में एक मात्र नदी स्वरूपा मां नर्मदा हैं जिसकी परिक्रमा का विधान हैं। नर्मदा जी वैराग्य की अधिष्टात्री मूर्तिमान स्वरूप हैं। सारा संसार इनकी निर्मलता और ओजस्विता व मांगलिक भाव के कारण आदर करता हैं व श्रद्धा से पूजन-वंदन करता हैं। मां नर्मदा की परिक्रमा करते-करते देश दुनिया के समस्त तीर्थो के उपतीर्थो के दर्शन का लाभ मिलता हैं। मां के तट पर द्वादश ज्योर्तिलिंग, 52 शक्तिपीठों के उपतीर्थ विराजमान हैं। नर्मदा जी की सबसे प्रचलित मुंडमाल परिक्रमा जिसमें लगातार चलकर परिक्रमा पूर्ण करना होता हैं। इसमें कम से कम 4 माह और अधिक से अधिक 12 वर्ष लगते हैं। व्यस्तता भरें जीवन में कई बार एक साथ इतना लंबा समय निकलना कठिन होता हैं, पर मैया जी के तट पर चलते-चलते समय भी बिताना हैं, इसी उद्देश्य से पंचकोषी यात्राओ , उत्तरवाहिनी यात्राओं की शुरूआत की गयी। पंचकोषी और उत्तरवाहिनी यात्राओं में चलते हुये दो बार तट परिवर्तन करना होता हैं। इन यात्राओं को लेकर कहां जाता हैं कि पूर्ण परिक्रमा के बराबर पुण्य मिलता हैं परन्तु पुण्य-पाप के प्रपंचो में न पडते हुए केवल अच्छे भाव से मैया जी के तट पर चलकर अपने मन को साधने का प्रयास करना चाहिये, यहीं सबसे बडा पुण्य हैं।

परिक्रमा करते समय सामान्य नियम

परिक्रमा के लिये शास्त्रीय निर्देश यह हैं कि ''पदे-

पदे इति प्रदक्षिणा'' अर्थात जो पैदल-पैदल की जाये वहीं परिक्रमा,अन्य साधनों से की जाने वाली यात्राये हैं। पहले धर्मपारायण व्यक्ति छोटी-छोटी मंडलिया बनाकर तीर्थ यात्रा पर निकलते थे। यात्रा के मार्ग और पड़ाव निश्चित होते हैं। मार्ग में जो गांव या बस्तियां मिलते, उनमें रूकना और किसी उपयुक्त स्थान पर रात्रि विश्राम करना होता हैं। जहां रूकना वहां धर्म चर्चा करना, लोगों को कथा सुनाना, यह क्रम प्रातः से रात्रि विश्राम तक चलता हैं। रात्रि पडाव में भी कथा संकीर्तन, सत्संग का क्रम बना रहता हैं।

परिक्रमा के सामान्य नियम निम्नानुसार हैं -

- प्रतिदिन नर्मदा जी के जल में ही वगैर साबुन-सेंपू के स्नान करें। साथ ही हमेशा मां नर्मदा जल का सेवन भी करें। अपने आचरण से मां नर्मदा के किनारे गंदगी न करें।
- श्रद्धापूर्वक कोई भोजन करावे तो करना चाहिये, क्योंकि आतिथ्य सत्कार को अंगीकार करना तीर्थयात्री का धर्म हैं। जबरदस्ती दान की मांग नहीं करना चाहिये।
- व्यर्थ वाद-विवाद, पराई निंदा से बचना चाहिये। वाणी में संयम रखें।
- कायिक तप- देव, द्विज, गुरू, प्राग्य पूजन, शौंच मार्जनाम का पालन करना अति उत्तम होता हैं।
- ब्रम्हाचर्य, अहिंसा, शरीर तप उच्चते।
- तम्बाकू, धूम्रपान आदि व्यसनों से बचना चाहिये।
- मां नर्मदा की परिक्रमा में कन्या पूजन और कढाई भोग का

बडा महत्व हैं।

वर्षभर चलने वाली पंचकोसी यात्राओं के समय का विवरण

प्रत्येक माह में अमावस्या और पूर्णिमा तिथि पड़ती हैं, इन तिथियों पर मां नर्मदा में स्नान का विशेष महत्व होता हैं। मां नर्मदा के सम्पूर्ण तट पर लगभग 17 पंचकोषी यात्रायें प्रचलित हैं, इनमें अधिकतर यात्रायें दोनों पक्षों की पडने वाली एकादशी को प्रारंभ होकर पांचवे दिन पूर्णिमा या अमावस्या को समापन होती हैं। मास के इन महत्वपूर्ण 5 दिवसों में मां नर्मदा के किनारें चलते हुये आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करना अति पुण्यफलदायी होता हैं। प्रत्येक वर्ष की तिथियां तो वहीं होती हैं, पर अंग्रेजी माह की दिनांक बदल जाती हैं। तिथियों के साथ अंग्रेजी वर्ष 2023 में दिनांकों का विवरण निम्नानुसार हैं -

1. पौष शुक्ल एकादशी से पौषी पूर्णिमा तक (2 से 6 जनवरी 2023) नसीराबाद, ढाना, बाबई।
2. माघ कृष्ण दशमी से मौनी अमावस्या तक (17 से 21 जनवरी 2023) नर्मदापुरम-होशंगाबाद, बांद्राभान।
3. माघ शुक्ल पंचमी से माघ शुक्ल 9वीं तक (26 से 30 जनवरी 2023) शिवपुर, भिलाडिया, बाबरी (सिवनीमालवा जिला नर्मदापुरम)।
4. माघ शुक्ल एकादशी से माघी पूर्णिमा तक (1 से 5 फरवरी 2023) (1) मनोकामनेश्वर, चिचली, छोटी कसरावद, बडवानी। (2) बांद्राभान, सूरजकुंड, बांद्राभान-नर्मदापुरम् (3) वेदेश्वरी, कुंदेश्वरी, दयालपुरा- गोगांवा जिला खरगोन।
5. फाल्गुन कृष्ण एकादशी से अमावस्या तक (16 से 20 फरवरी 2023) - सिद्धक्षेत्र नाभिकुंड नेमावर, जोगा, फतेहगढ, ऋद्धनाथ हंडिया जिला हरदा।
6. फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से रंगभरी एकादशी तक (27 फरवरी से 3 मार्च 2023)- कवेश्वर, नर्मदेश्वर, रणगांव जिला खंडवा।
7. चैत्र शुक्ल एकादशी से स्नान पूर्णिमा तक (2 से 6 अप्रेल 2023) - (1.) महिष्मती जलकोटि, महेश्वर जिला खरगोन। (2.) गालव ऋषि स्मृति सांडिया घाट- पिपरिया जिला नर्मदापुरम।
8. वैशाख कृष्ण एकादशी से अमावस्या तक (16 से 20 अप्रेल 2023) - शालिवाहन, सटकेश्वर, नावडा टोली जिला खरगोन।
9. वैशाख शुक्ल एकादशी से वैशाखी पूर्णिमा तक (1 से 5 मई 2023) - गोंदावलेश्वर, गंगेश्वर, गोंदागांव विकासखंड टिमरनी जिला हरदा।
10. ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी से वट सावित्री अमावस्या (15 से 19 मई 2023) - माँ विध्यवासिनी-सलकनपुर, आंवलीघाट।
11. भीमसेनी एकादशर से स्नान पूर्णिमा तक (31मई से 4 जून 2023) - बिल्वामृतेश्वर, धरमपुरी जिला धार
12. आषाढ कृष्ण एकादशी से आषाढ़ी अमावस्या तक (14 से 18जून 2023) - शूलपाणेश्वर, गरूणेश्वर- गुजरात।
13. आश्विन कृष्ण एकादशी से पितृमोक्ष अमावस्या तक (10 से 14 अक्टूबर 2023) - नर्मदेश्वर, पूर्णेश्वर, नर्मदानगर जिला खंडवा।
14. आश्विन शुक्ल एकादशी से शरद पूर्णिमा तक (24 से 28 अक्टूबर 2023) - सीतावन जयंती माता, धाराजी, पीपरी - बागली जिला देवास।
15. कार्तिक कृष्ण नवमीं से कार्तिक कृष्ण धनतेरस तक (6 से 10 नवंबर 2023) - कुबेर भंडारी ओम्कारेश्वर।
16. कार्तिक शुक्ल देवउठनी एकादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक (23 से 27 नवंबर 2023) - ओंकार, मांधाता, त्रिपुरी जिला खंडवा।
17. मार्गशीर्ष कृष्ण एकादशी से मार्गशीर्ष अमावस्या तक (8 से 12 दिसंबर 2023) - बराहेश्वर, बडदा-बाकानेर, जिला धार।
18. मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी से स्नान पूर्णिमा तक (22 से 26 दिसंबर 2023) - श्री नरसिंह अवतार बडवानी, राजघाट जिला बडवानी। □

भारत का प्रथम नर्मदा परिक्रमावासी अखिल भारतीय सम्मेलन

विश्वनाथ शिरढोणकर
(लेखक - मराठी, हिन्दी साहित्यकार एवं कवि।)

हमारे देश में प्राचीन काल से ही तीर्थाटन और देशाटन का अत्यंत महत्व रहा है। सभी सुख सुविधाओं सहित धार्मिक टूरिज्म यह भले ही आज फैशन हो गया हो और इसका बहुत बड़ा बाजार हो गया हो, कितना भी इसका आर्थिक महत्व भी हो, परन्तु बदली परिस्थियों में वर्तमान पीढ़ी को प्राचीन समय से चला आ रहा तीर्थांटन और देशाटन कैसे समझेगा? पहले गृहस्थ आश्रम से वानप्रस्थाश्रम का अर्थ सांसारिक मोह माया से विरक्त होने से होता था। सामाजिक व्यवस्था में ऐसे लोग अपने बच्चों को सब कुछ सौप कर चारों धाम या धार्मिक स्थल पर यात्रा के लिए निकल पड़ते थे। इसे एक प्रकार से पुरानी पीढ़ी द्वारा भावी पीढ़ी को सम्पत्ति और संस्कारों को सहेजने हेतु किया गया हस्तांतरण भी कह सकते है। सभी सन्यासी और साधु-संतों द्वारा भी पैदल तीर्थाटन और देशाटन करने के अनेक उदाहरण मिलते है। जगद्गुरू आदि शंकराचार्य के अलावा सैकड़ों नाम लिए जा सकते है।

श्रवणकुमार की कथा सभी को स्मरण होगी जो अपने वृद्ध माता-पिता को खुद कांधे पर उठा पैदल चला था। कावड़ यात्राएं तो आज भी हमें जगह-जगह दिखाई देती है। तीर्थाटन या देशाटन पैदल होने से आखिर साध्य क्या होता है? व्यक्ति जब घर से बाहर निकलता है तो उसे अनेक अनुभव होते है। एक कहावत है घाट-घाट का पानी पिए हुए है। घाट घाट का पानी पीने का अर्थ सभी नदियों के तट के भ्रमण से है। घाट घाट के पानी का स्वाद जो ले लेता है वह बिना किसी मैनेजमेंट विद्यालय में अध्ययन किये सिर्फ अनुभव के बल पर ही बहुत सारा ज्ञान प्राप्त कर लेता है। अलग अलग जगह की बोली, अलग अलग हवामान, रहनसहन, आर्थिक स्थिति, खानपान, लोगों का स्वभाव और व्यवहार, आवभगत करना, खेती किसानी के तरीके, पैदावार, फल फूल, जंगल, नदियां, पहाड़, पशु-पक्षी इन सब से भ्रमण करने वाले का सामना होने से उसे ढेर सारा अनुभव प्राप्त होता है। उसे बहुत कुछ नया सीखने का अवसर भी प्राप्त होता है। इसके अलावा व्यक्ति का स्वभाव हर समय हर एक से तुलना करना होने से उसमें स्वयं ही अपने आप

सकारात्मक बदल होता रहता है। घाट घाट भ्रमण करते समय खुद की अपेक्षाएं एक ओर रखनी होती है। अनेक बार भूखा भी रहना होता है। अनेक बार विपत्तियों से सामना भी होता है, इसलिए हम पैदल की गयी देशाटन-तीर्थाटन को साहसिक यात्राएं (एडवेंचर) भी कह सकते है। घाट घाट के पानी का अनुभव प्राप्त करने हेतु पैदल चलने का अत्यंत महत्व होता है। पैदल चलने से शरीर और मन दोनों दृष्टि से सुदृढ़ हो जाते है।

देश के हृदय स्थल स्थित नर्मदा नदी सात पवित्र नदियों में से एक नदी है। नर्मदा नदी का धार्मिक, अध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, पर्यावरण, खेती, पेयजल, यहाँ तक कि बिजली निर्माण हेतु भी बहुत महत्व है। गंगा सहित भारत में अनेक पवित्र नदियां है परन्तु परिक्रमा और वह भी पैदल, श्रद्धा पूर्वक नर्मदा मैया की ही की जाती है। इस परिक्रमा का महत्व सिर्फ नर्मदा मैया के लिए ही है। नर्मदा किनारे रहने वाले स्थानीय लोगों में नर्मदा नदी के प्रति बहुत आस्था है। स्थानीय लोग नर्मदा नदी से स्वयं को भावनिक रूप से जुड़ा पाते है। नर्मदा नदी के किनारे की समस्त बसाहट की आर्थिक व्यवस्था 'नर्मदा मैया' के कारण ही गतिमान है। इस नदी के महत्व को स्वीकारते हुए इसे जीवनदायिनी भी संबोधित किया जाता है। इंदौर जैसे महानगर को तो पानी भी नर्मदा नदी के कारण ही मिलता है। नर्मदा नदी के इस महत्व को स्वीकारते हुए नर्मदा नदी को केंद्र में रख, आयोजकों ने इंदौर में दो दिवसीय समग्र नर्मदा परिक्रमा साहित्य दर्शन सम्मेलन के आयोजन का निर्णय लिया।

नर्मदा नदी यह विषय सम्मेलन हेतु चयनित होने से श्रोताओं के मन में नर्मदा मैया की छवि भी उमटना आवश्यक था, तभी आयोजन की सार्थकता परिलक्षित होनी थी। यह विचार कर, नर्मदा नदी का पौराणिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, आर्थिक, नर्मदा किनारे का जनजीवन, ऐसे विषयों को व्याख्यान, चर्चा/चिंतन के लिए शामिल किया गया। महत्वपूर्ण यह कि जिन उत्साही नर्मदा प्रेमियों ने नर्मदा मैया की 1300 किलोमीटर की नंगे पांवों से पैदल परिक्रमा की हुई थी उन्हें अपने अनुभव कथन सादर करने हेतु आमंत्रित करने का निश्चित हुआ था। नर्मदा आरती, विशेषज्ञों का व्याख्यान, शोभायात्रा, परिचर्चा, प्रश्नोत्तरी, नर्मदा नृत्य नाटिका, संगीतमय नर्मदा, नर्मदा नदी विषयक चलचित्र प्रदर्शन, इत्यादी कार्यक्रम संमेलन में सम्पन्न हुए। इस महाकुंभ आयोजन के सफल संचालन में अनेक संस्थाएं सहयोग हेतु सहर्ष तैयार हुई। लिवा साहित्य सेवा समिति, इस संस्था के साथ,अखिल भारतीय त्रिपदी परिवार, नर्मदालय, लेपा, कसरावद, श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य सेवा समिती, इंदौर, नर्मदा समग्र मालवा का एकमात्र प्रसिद्ध मराठी मासिक श्री सर्वोत्तम, भाटे ट्रॅव्हल्स,या शिवाय राज्य भाषा विकास संस्था, महाराष्ट्र शासन, सांस्कृतिक विभाग, मध्यप्रदेश शासन, इत्यादि के आलावा कार्यक्रम हेतु प्रकाशित होने वाले हिंदी विशेषांक और श्री सर्वोत्तम के नर्मदा सम्मेलन विशेषांक हेतु विज्ञापन दाता भी आयोजन में शामिल थे।

साथ ही अनेक विशेषज्ञ साधु संतों का सानिध्य एवं मार्गदर्शन श्रोताओं को प्राप्त हुआ।

नर्मदा नदी किनारे के जबलपुर शहर के नर्मदा प्रेमियों का उत्साह सम्मेलन में सभी के आकर्षण का केंद्र रहा। 32 लोगों का यह समूह जबलपुर से श्री विश्वास पाटणकर के नेतृत्व में चार दिन इंदौर में रहा। जबलपुर में नर्मदा पूजा और नर्मदा कलश स्थापना पश्चात इस समूह द्वारा, पावन नर्मदा (जल) कलश अत्यंत भक्तिभाव से इंदौर के श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति (कार्य स्थल) में स्थापित किया गया। सुबह शाम रोज तीन दिन सामूहिक रूप से नर्मदा आरती हुई और इस कारण वातावरण में पवित्रता अनुभव होने लगी थी।

उद्घाटन सत्र में पहले दिन नर्मदालय, लेपा मंडलेश्वर के बाल कलाकारों की सुमधुर व श्रवणीय भजन प्रस्तुति से श्रोता प्रभावित हुए। इसके पश्चात जबलपुर समूह के कलाकारों द्वारा 05 विभिन्न रागों पर आधारित अप्रतिम स्वरों में नर्मदाष्टक सादर किया गया। इसके पश्चात जबलपुर समूह की ही वरिष्ठ मातृशक्ति समूह द्वारा किया गया। नर्मदा मैया इस सामूहिक नृत्य ने सबका मन मोह लिया। भारती ठाकुर की अध्यक्षता और डॉ. सुरुची नाईक के सूत्र संचालन में संपन्न 'नर्मदा मैया

आणि मी' (मराठी में) इस अनुभव कथन कार्यक्रम में पैदल एवं अन्य साधनों द्वारा नर्मदा परिक्रमा के अनुभव कथन (मराठी में) में 15 वक्ताओं ने अपने अनुभव व्यक्त किये। संध्या समय पश्चात प्रसिद्ध नृत्यांगना डॉ. सुचित्रा हरमळकर और सहयोगी कलाकारों द्वारा प्रस्तुत नर्मदा नदी की उत्पत्ति से कथा का वर्णन करती नृत्य नाटिका सम्मेलन में सभी के आकर्षण का केंद्र रहा।

सम्मेलन में अनेक आकर्षण थे इनमें महत्वपूर्ण प्रमुख विद्वतजनों द्वारा दिया गया मूल्यवान मार्गदर्शन भी था। पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सुमित्रा महाजन ने नदी संस्कृति विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, नदी संस्कृति अर्थात जहा जहा स शब्द आता है वह सकारात्मक कृति हेतु उपयोग किया गया शब्द होता है। कृति सभी जिम्मेदार नागरिकों द्वारा अपेक्षित है। सृष्टि यह परमेश्वर की अभिव्यक्ति है। निसर्ग सृष्टि (प्रकृति) और मानव सृष्टि का गहरा सम्बन्ध है। इनमें सदैव एकात्मकता होनी चाहिए। सृष्टि के विकास हेतु जो भी सकारात्मक कृतियाँ मनुष्य करता है उसे ही संस्कृति कहा जाता है। इन्हीं सकारात्मक कृतियों में समस्त मनुष्य जाति की उन्नति निहित होती है, और यही नदी संस्कृति का भी एक प्रमुख तत्व है। समस्त प्राणी मात्र स्वस्थ जी सके यह भावना ही सच्चा लोकतंत्र होता है, परन्तु आज हम इस मूल मंत्र को ही भुला बैठे है। लोकतंत्र की संकल्पना भुलाने से काम नहीं चलने वाला। मनुष्य क्या और प्राणी क्या? जल के बिना कोई भी जीवित नहीं रह सकता। जल ही जीवन है। रोजमर्रा के काम में भी जल का अत्यंत महत्व हो कर जीने के लिए जल यह प्रधान तत्व है। इसलिए हमारे देश में नदियों का अनादि काल से महत्व रहा है। 'गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती, नर्मदे सिंधू कावेरी जलेअस्मिन सन्निधिम कुरू' यह श्लोक स्नान करते समय नित्य नियम से कहा जाना चाहिए इससे नदियों पता पड़ता है। हमारे देश में गंगा, यमुना, नर्मदा सहित समस्त नदियों का धार्मिक, अध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व भी है। विश्व में भी नदियों का महत्व होता है, फिर वह रशिया की वोदका हो, अमेरिका की अमेजॉन हो या ब्रिटेन की टेम्स हो। प्रत्येक नदी अपने प्रवाह के साथ उसके क्षेत्र को सुखी और समृद्ध बनाती रहती है। यथार्थ में नदी सिर्फ मनुष्य ही नहीं बल्कि समस्त प्राणी मात्र के जीवन में जीवनदायिनी होती है। कई देशों में नदी को देवी-देवताओं के रूप में मान्यता प्राप्त है तो कई देशों में नदी को जीवित जैसा माना जाता है और नदियों को भी स्वच्छ रहने हेतु कानूनी अधिकार दिए गए है। हम इसे प्राकृतिक तत्वों से सम्बन्ध साधने की एक प्रक्रिया कह सकते है, परन्तु हमारे देश में अभी नदी के संबंध में उचित जागरूकता पैदा करने की जरूरत है। हम प्रकृति से संवाद स्थापित करना भूल चुके है। सरस्वती सहित अनेक नदियां हमारी लापरवाही और उदासीनता के कारण लुप्त हो चुकी है। आज बहुतांश नदियां प्रदूषित हो चुकी हैं। आने वाली पीढ़ियों हेतु यह प्रदूषण अलग ही प्रकार का संकट हो सकता है।

अनेक बार नर्मदा मैया की पैदल परिक्रमा कर चुके केंद्रीय मंत्री श्री प्रहलाद पटेल ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, यहाँ इस सम्मेलन में अनेक नर्मदा भक्त और नर्मदा परिक्रमावासी उपस्थित है। यह पहली बार है कि नर्मदा परिक्रमा वासियों का अखिल भारतीय सम्मेलन इतने बड़े

पैमाने पर हो रहा है, सभी अपने अपने अनुभव साँझा कर रहे है। हमारे देश में सिर्फ नर्मदा नदी की ही परिक्रमा की जाती है। परिक्रमा करते हुए परिक्रमावासी भावनात्मक रूप से भी नर्मदा नदी के साथ जुड़ते जाते है। नदी स्वच्छता और पर्यावरण की दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। पहले के समय नर्मदा परिक्रमा पैदल करने का अर्थ वापस घर लौटने की शाश्वती नहीं होती थी। अतः उस समय सूचना और सोचना का अत्यंत महत्व होता था। सूचना मतलब परिक्रमा पर निकलने से पूर्व माता-पिता को सूचित करना और सोचना मतलब पत्नी की सहमति प्राप्त करने से होता था। वर्तमान में परिक्रमा वासियों को यह परिक्रमा करने हेतु अनेक प्रकार की सुविधाएं प्राप्त है। यही कारण है कि वर्तमान में युवा भी उत्साहपूर्वक नर्मदा मैया की परिक्रमा करने लगे है। सही अर्थों में नर्मदा अर्थात नर का मद हरने वाली मां अर्थात नर्मदा और परिक्रमा अर्थात एक परीक्षा, जो परिक्रमा सम्पन्न होने के पश्चात पूर्ण होती है। इस परीक्षा में अनेक अनुभवो का खजाना होता है। परिक्रमा के इस दृढ़ निश्चय में सभी अवगुणों से दूर होना भी महत्वपूर्ण होता है। अहंकार दूर करने के पश्चात ही नर्मदा मैया की परिक्रमा यश और पूर्णता को प्राप्त होती है।

आदिवासी बच्चों के कल्याणार्थ स्थापित नर्मदालय संस्था लेपा, मंडलेश्वर की प्रवजिका विशुद्धानंदा जी (सुश्री भारती ठाकुर) ने अनुभव कथन करते हुए अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार व्यक्त किये, नर्मदा परिक्रमा करते समय मुझे अनेक अनुभव प्राप्त हुए। मध्यप्रदेश के एक आदिवासी खरगोन जिले में घूमते हुए वहाँ के स्थानीय आदिवासी और वनवासी लोगों की रोजमर्रा की समस्याओं से सामना हुआ और उनकी समस्याओं का करीब से अनुभव भी हुआ। अशिक्षा और बेरोजगारी यह आदिवासी गावों की आज भी बड़ी समस्या है। तब मन में यह कल्पना आयी कि आदिवासी बच्चो के लिए यहाँ कोई स्कूल होना चाहिए, और इस तरह यह नर्मदालय संस्था 2009 में स्थापित हुई। आज हमारी नर्मदालय संस्था में 150 से भी अधिक आदिवासी बालक/बालिकाएं शिक्षण/प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है। बच्चों के निवास/ भोजन की व्यवस्था के अलावा रोजमर्रा की अधिकांश जरूरतों की पूर्तता भी हम हमारी संस्था में ही करते है। इनमें दूध हेतु गाय पालन, दूध से निर्मित सारे उत्पादन, सब्जी उत्पादन, यहाँ तक की हमारे यहाँ बढ़ई एवं फेब्रिकेशन का काम भी बच्चें करने लगे है।

आज हमारे देश में सबसे बड़ी समस्या शोषण की है। इनमें प्रकृति का शोषण हम बहुत बड़े पैमाने पर करते आ रहे है और देश में हमारी नदियां ही सबसे ज्यादा शोषित और प्रदूषित है। नर्मदा नदी देश के उत्तर और दक्षिण भाग को भौगलिक रूप से जोड़ने का काम करती है। नर्मदा नदी देने (दाता) वाली नदी है। आज उसका जल भोपाल,इंदौर, उज्जैन, देवास सहित गुजरात के भी अनेक गावों की प्यास बुझाने के काम आता है। इतना ही नहीं सिंचाई के अलावा नर्मदा का जल विद्युत उत्पादन के लिए भी उपयोग में किया जाता है। इतने बड़े पैमाने पर नर्मदा नदी का और देश में अन्य नदियों का उपयोग होने के बावजूद, नदियों का और वनों का शोषण थम नहीं रहा हो तो नर्मदा मैया की परिक्रमा निरर्थक हो जाती है। साधनों की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता के कारण वर्तमान में नर्मदा परिक्रमा करने वालों की एक बाढ़ सी आगयी है। इनमें अधिकांश सम्पन्न और शिक्षित लोग में होते है। परिक्रमा करते समय इन सबसे नर्मदा किनारे स्वच्छता बनाये रखने की भी अपेक्षा की जाती पर वास्तविकता में यह अनुभव नहीं होता। यह शोचनीय स्थिति है। इस दुर्दैवी मानसिकता में परिवर्तन होना चाहिए। आज देश में नर्मदा नदी के अलावा अनेक नदियों की अधिकांश उप नदियां है जो विलुप्त हो गयी है। यह स्थिति विनाशकारी है। अतः नर्मदा नदी सहित सभी नदियों की शुद्धता बनाये रखना हमारा नैतिक कर्तव्य है।

त्रिपदी परिवार के प्रमुख, भूगर्भ विशेषज्ञ डॉ. बाबासाहेब तराणेकर ने संपूर्ण नर्मदा नदी क्षेत्र के बारे में पौराणिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और भूगर्भीय ऐसी महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने कहा, नर्मदा व्हॅली (घाटी) यह नाम ब्रिटिश सरकार ने उनके गॅझेटिअर में दिया। वास्तविकता यह है कि बहुत प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र रेवा खंड के रूप में उल्लेखित है। भूगर्भ शास्त्र के अनुसार

रेवा खंड यह क्षेत्र 60 करोड़ वर्ष इतना प्राचीनतम है। नर्मदा नदी का उद्गम यह गंगा नदी के भी पूर्व का है। इतना ही नहीं वरना रेवा खंड यह विश्व में सबसे प्राचीन भूगर्भीय खंड है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में ' रेवा खंड' के वैभव का विस्तृत वर्णन किया हुआ है, और इसमें जल संवर्धन के बारे में भी समस्त जानकारी है आज जल संवर्धन एवं पर्यावरण की ओर गंभीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है।

बीई, एमबीए, एमएससी और आयआयटी में अध्यापन का अनुभव प्राप्त उच्च शिक्षित स्वामी समानंद गिरी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, सृष्टि की उत्पत्ति के बाद वेदों का निर्माण हुआ। वेदों में, ब्रम्ह तत्व और ज्ञान तत्व प्रमुख है। इस उत्पत्ति के साथ अनेक तीर्थ स्थानों का निर्माण भी हुआ। इसके पश्चात महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना भी की। इन सभी का एकमात्र उद्देश्य मनुष्य का मार्गदर्शन करना और मनुष्य द्वारा ब्रम्ह तत्व को प्राप्त करना था। मानव शरीर रचना पंचमहाभूत तत्वों के कारण होने से सूक्ष्म और स्थूल दोनों के लिए ही जलतत्व एक प्रमुख घटक है। नर्मदा मैया की परिक्रमा करने से हमें जलतत्व का महत्व विस्तृत रूप से पता पड़ता है। नर्मदा मैया की परिक्रमा करने से ही हमें जलतत्व के बारे में अनेक सार्थक अनुभव भी प्राप्त होते है। नर्मदा नदी एक चैतन्य प्रवाह है। जलतत्व के कारण हमारे शरीर में भी सूक्ष्म परिवर्तन होते रहते है। जलतत्व शरीर में प्राण निर्माण करते है। हमारा चित्त शुद्ध करते है। जैसा जैसा जल प्रदूषित होता जाता है वैसे वैसे हमारे शरीर में भी अस्वस्थता निर्मित होती जाती है। हमारा चित्त अशुद्ध होकर मन दूषित हो जाता है। इसलिए स्वच्छ निर्मल जल का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व होता है। इसलिए प्रत्येक नदी प्रदूषण मुक्त होना और स्वच्छ होना यह समय की आवश्यकता है।

नर्मदा समग्र (भोपाल) संस्था के मुख्य कार्यवाह तथा नर्मदा समग्र त्रैमासिक पत्रिका के संपादक श्री कार्तिक सप्रे ने नर्मदा नदी एवं जलसंवर्धन, नर्मदा में जलप्रवाह में सहायक विंध्याचल एवं सतपुड़ा पर्वत की शृंखलाओं के बारे तथा नदी किनारे पर्यावरण सहेजने हेतु स्व. अनिल माधव दवे जी द्वारा प्रणित नर्मदा समग्र संस्था की ओर से किये जाने वाले कार्य की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा, नर्मदा समग्र न्यास एक सामाजिक संस्था है। किनारे में बसें लोगों में जागरूकता लाने के अलावा नर्मदा नदी से सम्बंधित अनेक छोटी छोटी समस्याओं पर हमारी संस्था कार्यरत है। इनमें नर्मदा केचमेंट क्षेत्र में डीफॉरेस्टिंग, नर्मदा किनारे खेतों में अत्यधिक रसायन खाद का उपयोग, किनारे कचरा बढ़ना, वनों की कटाई, बांधों का निर्माण जैसी समस्याएं है।

नर्मदा नदी के उद्गम से संगम तक विंध्याचल एवं सतपुड़ा पर्वत के घने जंगलों की ऊंचाई से झरनों के रूप में धाराओं से 41 सहायक नदियों द्वारा नर्मदा का जल प्रवाह है। नर्मदा नदी के 1300 किलोमीटर के प्रवाह में 26 जिले मध्यप्रदेश के, 04 जिले गुजरात के एवं 01 जिला महाराष्ट्र में है। नदी जल ग्रहण में कटाव सबसे बड़ी समस्या है। अधिक मात्रा में रसायनयुक्त खेती के कारण नर्मदा नदी अत्यधिक प्रदूषित है। वैसे नर्मदा नदी का अपना एक विशेष और विस्तृत अर्थशास्त्र है, किनारे बसे समस्त नर्मदा वासियों का एक परिवार है। सारी आर्थिक गतिविधियों का केंद्र भी यही नर्मदा परिवार होता है। नर्मदा मैया इन सबके जीवन यापन का साधन है। स्वर्गीय अमृतलाल जी वेगड़ नर्मदा नदी को सौंदर्य की नदी उल्लेखित करते थे और इस उपमा को आगे बढ़ाते हुए स्व. अनिल माधव दवे उपरोक्त उल्लेखीत कारणों से अपनी सभी विशेषताओं के रहते नर्मदा को सौंदर्य की नदी के साथ ही नर्मदा नदी सुख देने वाली नदी भी है, ऐसा कहते थे। नर्मदा परिक्रमा, प्रकृति और परमात्मा से संवाद करने का आरम्भ है, इस आरम्भ को हम परिक्रमा करते हुए अनुभव कर सकते है। नमर्दा परिक्रमा का अर्थ पैदल किनारे किनारे ठहरते हुए लोक संवाद और लोक दर्शन करते हुए, देव दर्शन की ओर अग्रसर होना है। यही कारण है कि नर्मदा मैया के किनारे सर्वाधिक साधक होते है। यह कहावत भी प्रसिद्ध है , नर्मदा किनारे कमंडल से कमंडल टकराते है। अंत में यही कि घने जंगल वन धन है, अथाह नीर जल धन है, मनुष्य ही नहीं प्राणिमात्र के अस्तित्व के लिए 'वन धन' और जल धन को सुरक्षित रखना नितांत आवश्यक है। इस सम्मेलन में इंदौर सहित देश के अनेक शहरों से साधु-संतों, प्रबुद्धजनों एवं चिंतकों द्वारा अपने

नर्मदा परिक्रमा
साहित्य सम्मेलन

॥ नर्मदे हर ॥

चंदन, सन्दल

(SANDAL WOOD TREE)

Santalum album — Family – SANTALACEAE

डॉ. सुदेश वाघमारे

(लेखक - सेवानिवृत उपवनसंरक्षक, म.प्र. राज्य वनसेवा, नगरीय पौधारोपण, वन्यप्राणी, प्रबंधन, जलसंरक्षण और जैव विविधता में विशेषज्ञता तथा सुदीर्घ मैदानी अनुभव। संप्रति- स्वतंत्र लेखक।)

चन्दन दक्षिण भारतीय मूल का वृक्ष है। दक्षिण भारत से यह कैसे नर्मदा तट के सिवनी, रायसेन के सघन वनों में किसी समय यह पर्याप्त संख्या में पाया जाता है। मध्यप्रदेश की जलवायु इसे रास आती है।

यह मध्यम आकार का सदाहरित वृक्ष है जो अनुकूल परिस्थितियाँ मिलने पर 20 मीटर की ऊँचाई तक पहुँच जाता है। चन्दन का हृद-काष्ठ (heart wood) अत्यंत मूल्यवान होती है। इसके वाष्पीकरण से ही तेल बनाया जाता है। इसी काष्ठ से निर्मित मूर्तियां और काष्ठ शिल्प बाजार में बहुत महंगे दामों में बिकता है। चन्दन की लकड़ी भारतीय संस्कृति में अत्यन्त पवित्र मानी जाती है और पूजा विधान तथा तिलक करने में उपयोग की जाती है। इसकी जड़ों में सबसे अधिक तेल पाया जाता है, अतः जड़ों सहित खोदकर निकाला जाता है।

रक्त चन्दन के नाम से भी एक वृक्ष होता है जिसका नाम टेरोकार्पस सेंटेलम (Pterocarpus santalum) है। यद्यपि यह चन्दन के नाम से मिलता है परन्तु, गुण धर्म एवं आर्थिक महत्व में चन्दन से सर्वथा भिन्न होता है। इसकी लकड़ी भीतर से लाल रंग की निकलती है इसी कारण इसे रक्त चन्दन कहते हैं। इसमें फलियाँ पाई जाती हैं। इसकी तुलना वास्तविक चन्दन से नहीं करना चाहिए।

वास्तविक चन्दन कर्नाटक (मैसूर) का राज्य वृक्ष है। इसका वृक्ष बहुशाखी होता है और शाखायें तथा पत्ते नीचे की ओर लटकते हैं। पत्ते गोल से थोड़ा सा अंडाकार आकृति के तथा विपरीत होते हैं। पुष्प संख्या में बहुतायत से आते हैं जो प्रारंभ में हल्के पीले परंतु बाद में बैंगनी वर्ण के हो जाते हैं। फल प्रारंभ में गोल तथा हरे होते हैं परन्तु पकने पर गहरे बैंगनी रंग के या काले हो जाते हैं। एक फल से एक ही बीज निकलता है। इसका अंकुरण एवं प्रारंभिक विकास (Semi-parasite) अर्द्धपरजीवी दशा में होता हैं। अंकुरण के लिये इसे किसी अन्य पौधें की जड़ों में बोया जाता है। मध्यप्रदेश की रोपणियों में तुवर के पौधों क जड़ों में उगाने की परम्परा है।

पश्चिमी घाट में इसे कुचला (strychnos nux-vomica) वृक्ष की जड़ों में परजीवी (parasite) के रूप में उगाने की परम्परा है।

इसकी छाल गहरी भूरी होती है और पत्तियां प्रायः विपरीत या कभी-कभी एकान्तर भी होती है। पर्णवृन्त बड़ा लगभग 1 सेमी का होता है। पुष्प गंधहीन, गुच्छों में तथा परिपक्वता पर नीले-काले रंग के होते हैं। एकल बीज कठोर होते हैं और इनकी अंकुरण क्षमता कम होती है। चन्दन की एक ओर विशेषता होती है कि इसमें मूल-प्रसारक (root-runners) पाये जाते हैं। जिनसे नये पौधे उत्पन्न हो जाते हैं।

पुष्पन जुलाई से अगस्त तक होता है और फलन अक्टूबर-नवम्बर में होता है। अधिकांश नई पत्तियां भी मई-जून के माह में ही आती हैं। इस वृक्ष का विवरण भारतीय धर्मग्रंथों रामायण और महाभारत में भी मिलता है जिससे इसका देशज वृक्ष होना सिद्ध होता है जबकि विदेशी वनस्पति शास्त्री इसे तैमोर द्वीप, इंडोनेशिया के निकट की मूल वनस्पति मानते हैं। □

भारतीय साहित्य में चन्दन के वृक्ष का प्राचीन काल से उल्लेख मिलता है। एक दोहा बहुत प्रसिद्ध है-

जो रहीम उत्तम प्रकृति का करि सकत कुसंग,
चन्दन विष व्यापत नहीं लिपटे रहत भुजंग।

जबकि वास्तविकता है कि चन्दन के वृक्षों से सांप लिपटे नहीं पाये जाते। यह किंवदन्ती है। जब किसी निकट के महत्वपूर्ण व्यक्ति या वस्तु का सम्मान नहीं करते हैं तो दोहा है-

अति परिचय से होत है बहुत अनादर भाय,
मलयागिरि की भीलनी, चन्दन देत जलाय।

एक और प्रसिद्ध दोहा है -

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर,
तुलसीदास चन्दन घिसे तिलक देत रघुवीर।

चन्दन को आयुर्वेद में उनकी उत्पत्ति स्थल के अनुसार 5 प्रकारों में बांटा गया है- 1. गौ शीर्ष, 2. वेट्ट, 3. सुक्कड़, 4. बर्बर, 5. तैलपर्ण। मलयाचल पर्वत के चन्दन को मलयज अथवा भद्रश्री के नाम से पुकारा जाता है। गुलाब जल और कपूर के साथ यह सिरदर्द में उपयोगी होता है और कई चर्म रोगों में उपयोग किया जाता है। तेल मूत्रक, कफ निस्सारक और उष्ण होता है। इलायची और वंश लोचन के साथ यह उष्णवात, खांसी, मूत्राशय तथा गुर्दों की जलन और पुराने अतिसार में उपयोग किया जाता है। एथनोबॉटनी के अनुसार आदिम संस्कृति में इसके बीजों का उपयोग गर्भस्त्राव में होता रहा है। उर्दू के एक शायर ने भी इसका वर्णन निम्नानुसार किया है -

दर्दे-सिर के वास्ते चन्दन बताते है मुफीद,
लेकिन घिसना और लगाना यह भी एक सिरदर्द है।

फोटो - राजेश जादम

नदी एम्बुलेंस बनी वरदान, बचाई माँ और बच्चे की जान

संदीप बागड़े
(तेरक्रक - नर्मदा समग्र कार्यकर्ता।)

ग्राम जलसिंधी तहसील सोंडवा जिला अलीराजपुर में स्थित है जहां स्वास्थ्य संबंधी मूलभुत सुविधाओं की आज भी कमी हैं यह क्षेत्र सरदार सरोवर डूब क्षेत्र में आता है, इस क्षेत्र में नर्मदा समग्र न्यास द्वारा नदी एम्बुलेंस चलाई जाती है जो इस डूब क्षेत्र के लगभग 35-40 गांवों तक अपनी सेवाएं प्रदान करती है। इस नदी एम्बुलेंस पर चिकित्सक सहित बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित इलाज नदी एम्बुलेंस के माध्यम से किया जाता है।

वर्ष 2020 का ऐसा ही एक वाकया इस नदी एम्बुलेंस का बड़ा ही रोचक है। ग्राम जलसिंधी की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता के पति अम्बाराम द्वारा नदी एम्बुलेंस जो की सरदार सरोवर के डूब क्षेत्र में नर्मदा समग्र न्यास द्वारा चलाई जाती है, वहां आकर बताया कि उनके छोटे भाई की पत्नि श्रीमती मांजी बाई को रात्रि 12 बजे से प्रसव पीड़ा शुरू हुई है। आसपास कोई भी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र या अस्पताल न होने से नदी एम्बुलेंस ही एक मात्र विकल्प है जहां पर डॉ. सहित स्टाफ भी उपलब्ध रहता है। अम्बाराम ने बताया कि महिला को प्रसव पीड़ा हो रही है तो नदी एम्बुलेंस पर मौजूद चिकित्सक एवं समस्त स्टाफ महिला के घर पहुंचे और महिला का स्वास्थ्य परिक्षण किया गया तत्पश्चात डॉ. ने महिला को नजदीकी अस्पताल बखतगढ़ ले जाने की बात परिजन से कही तो परिजन तो पहले मना करने लगे परन्तु डॉ. द्वारा समझाने के बाद वह अस्पताल ले जाने के लिए मान गये।

अब महिला को अस्पताल कैसे लेकर जाए यह भी एक समस्या थी, क्योंकि इस क्षेत्र में आवागमन के साधन उपलब्ध नहीं है, आवागमन के लिए नजदीकी ग्राम चिल्कदा जहां से सड़क मार्ग होने से आवागमन में सुविधा होगी।

प्रसव पीड़ा के दौरान गर्भवती महिला की जांच करते हुए
नर्मदा समग्र द्वारा संचालित नदी एम्बुलेंस के डॉ. कमलेश भावसार

ग्राम चिल्कदा तक उस पीड़ित महिला को एक मोटी सी लकड़ी में चद्दर को दोनों और बांधा गया तत्पश्चात उस महिला को उसमें लिटाया गया और आगे पीछे से दो युवकों ने उस लकड़ी को अपने कंधे पर उठाया और वहां से पैदल ही चलकर उस महिला को नदी एम्बुलेंस तक लेकर आये वहां से नदी एम्बुलेंस के माध्यम से उस महिला को चिल्कदा लेकर आये। चिल्कदा लाने के बाद डॉ. भावसार ने 108 एम्बुलेंस जो म.प्र. शासन द्वारा चलाई जाती है वहां सूचना दी गई। सूचना के उपरांत 108 एम्बुलेंस भेजने की बात कहीं गई किन्तु दुर्गम क्षेत्र होने के कारण समय लग रहा था।

इधर महिला की हालत बिगड़ती जा रही थी। इस दौरान डॉ. कमलेश भावसार ने अपनी सूझ बूझ का परिचय देते स्थानीय महिलाओं के साथ मिलकर सड़क किनारे ही महिला का सुरक्षित प्रसव कराने का मन बना लिया। परिजनों से इस बारे में सहमति लेने के बाद मांजी का बाई सड़क किनारे ही उचित स्थान पर सुरक्षित प्रसव कराया गया। प्रसव के पश्चात जच्चा और बच्चा दोनों ही स्वस्थ थे।

कुछ समय पश्चात मांजी बाई पति धानक्या के परिजनों ने कहां की अब हम माँ और बच्चे को अपने घर वापस लेकर जाते है। डॉ. भावसार ने थोड़ी देर रूककर जाने का कहा। कुछ समय व्यतीत होने के बाद डॉ. ने माँ और बच्चे का स्वास्थ्य देखने के बाद जब उन्हें तसल्ली हुई की जच्चा और बच्चा दोनों सुरक्षित है तब डॉ. कमलेश भावसार ने परिजनों को माँ और बच्चे को घर ले जाने की अनुमति दी और साथ ही किसी नजदीकी अस्तपाल में माँ और बच्चे को एक बार दिखाने की बात कहीं।

कुछ समय पश्चात परिजन खुशी-खुशी जच्चा और बच्चा को अपने साथ घर लेकर गये। नर्मदा समग्र द्वारा चलाई गई इस नदी एम्बुलेंस की और स्टाफ की परिजनों द्वारा सराहना की गई। इस पूरे वाकये को नदी एम्बुलेंस समन्वयक राजेश जादम द्वारा बताया गया जो वाकई एक रोचक और तथ्यपरक है। ऐसे पिछड़े क्षेत्र में आज भी बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं की कमी है। नर्मदा समग्र द्वारा चलाई जा रही इस नदी एम्बुलेंस की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है, क्योंकि आज इनकी पहल से ही एक माँ अपने बच्चे को सही सलामत घर ले गई। □

लघु सिंचाई योजना शिलान्यास के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने मेघनाद घाट (धार) पर नर्मदा समग्र के कार्यकर्ताओं से भेंट की और संस्था द्वारा संचालित नदी एम्बुलेंस के बारे में श्री मनोज जोशी (मुख्य समन्वयक) ने उन्हें विस्तार से अवगत कराया। (जुलाई २०२३)

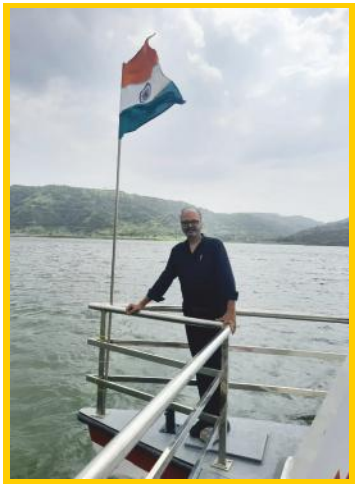

आज (17 जुलाई २०२३) नदी एम्बुलेंस देखने का अवसर मिला।
बलवंत सिंह जी और गुमान सिंह जी ने बहुत अच्छे से सब जानकारियां दी।
बहुत कुछ सीखने को मिला। साथ ही अनिल जी को भी नमन किया।
उनकी सोच और संकल्पना को आगे बढ़ाने में जुटी नर्मदा समग्र
के समस्त साथियों के लिए मंगलकामनाएँ।

डॉ. आलोक व्यास, उपनिदेशक,
संस्थागत विकास कार्यक्रम, सिकोईडिकोन

भोपाल में 1-२ जुलाई २०२३ को आयोजित C-२० सेवा सम्मेलन

'कठिन वृक्ष प्रजातियों के प्रसार के लिए नर्सरी प्रौद्योगिकी' पर क्षेत्रीय अनुसंधान सम्मेलन (आरआरसी) 18 अगस्त, 2023 को हाइब्रिड मोड में आईसीएफआरई - उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान (टीएफआरआई), जबलपुर में आयोजित कार्यशाला में नर्मदा समग्र महाकौशल भाग के समन्वयक श्री नीलेश कटारे सम्मिलित हुए। आपने नर्मदा समग्र द्वारा किए जा रहे कार्यों व गतिविधियों की जानकारी उपस्थित प्रतिभागियों के बीच रखी।

रेवा सेवा केंद्र आशुखेड़ी, महेश्वर में कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें महेश्वर तहसील के 25 ग्रामों से आमंत्रित 50 कृषकों में से 34 उपस्थित हुए। इस कार्यशाला में 'बीज संरक्षण एवं संवर्धन' विषय को लेकर श्री पी.एस. बारचे (कृषि अधिकारी खरगोन) एवं 'प्राकृतिक कृषि की अवधारणा' के विषय को लेकर श्री विश्वकर्मा (बायो रे इंडिया कसरावद) विषय विशेषज्ञ वक्ता के रूप में कृषकों का मार्गदर्शन किया एवं उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। नर्मदा समग्र के मुख्य समन्वयक, श्री मनोज जोशी ने नर्मदा समग्र की गतिविधियों से सभी को अवगत कराया, और जैव-विविधता बोर्ड के सहयोग से प्रारंभ हुए बीज केंद्र के कार्य में सभी की सहभागिता और सहयोग का आग्रह किया।

बाढ़ प्रभावितो के बीच नर्मदा समग्र की भूमिका (महाकौशल भाग)

महाकौशल भाग के अमरकंटक से नरसिंहपुर तक के नर्मदा तटीय जिलो में दिनांक 30 जुलाई 2023 से लगातार मूसलाधार बारिश के चलते 3 अगस्त 2023 वर्षा होती रहीं इस बीच में डिंडौरी जिले और मंडला जिले की छोटी बड़ी नदियाँ अपने उफान पर रही आवागमन के अनेको रास्ते 2 दिनों के लिए बंद हो गये बाढ़ के कारण विषम उत्पान हो गई जो जहाँ था वही रुक गया इन परिस्थिति में नर्मदा समग्र के अनेको कार्यकर्ताओ ने सेवा कार्य करना प्रारंभ किया जो बाढ़ प्रभावितो को प्रशासन के साथ मिल कर डूब क्षेत्र से अन्य स्थानों पर ले जाने जैसे कार्यो में सहयोग कियो

डिंडौरी जिले में श्रावण मास के कारण दूर झ्र दराज से अनेको लोग जल कलश की कावड यात्रा अमरकंटक लेकर जाते है इसकी बड़ी सख्या अमरकंटक से लौटकर जिला मुख्यालय डिंडौरी पहुंची लेकिन चारो तरफ के मार्ग बंद होने के कारण और अत्यधिक वर्षा के चलते भोजन एवं रुकने की उचित व्यवस्था ना हो पाना कावडियो के चिंता का विषय बना हुआ था क्योकि कावड़ियो की संख्या लगभग 160 थी। इतनी बड़ी संख्या को बस स्टेंड में उकने का उचित प्रबंध भी नहीं था इस बीच नर्मदा समग्र के भाग टोली सदस्य श्री सुधीरदत्त तिवारी जी और शंकर घाट टोली के प्रमुख्य कार्यकर्त्ता श्री राजू बर्मन जी द्वारा कावड़ियो और अन्य यात्रियों को सिविल लाईन स्थित शंकर मंदिर में भोजन की व्यवस्था करवाई और राजू बर्मन जी द्वारा स्वयं के मैरिज गाडन (किशोरी की बगिया) में सभी यात्रियों के रात्रि विश्राम की व्यवस्था की, दुसरे दिन जब बाढ़ कम हुई और सभी रास्ते खुले बसों का आवागमन शुरू हुआ तब सभी यात्री अपने-अपने गंतव्य को प्रस्थान किया।

यही हालत मंडला जिले के महाराजपुर संगम घाट के भी बने हुए थे यह स्थान मंडला नगर का उप नगर महाराजपुर कहलाता है यहाँ माँ नर्मदा और बंजर नदी का संगम क्षेत्र यही स्थित है यहाँ की अनेको धार्मिक मान्यतायें है इस घाट में अनेको जिले बालाघाट, सिवनी, छिंदवाडा से श्रद्धालु आते हैं जिसके कारण यहाँ आये दिन मेला सा माहौल बना रहता है माँ नर्मदा और बंजर के किनारे अनेको घर बने हुए है जो कि नदी के किनारे कछार (सब्जी) लगाने का कार्य करते है यहाँ नर्मदा घाट में अनेक दुकाने बारह माह लगी रहती है बाढ़ आने के कारण अनेक घरो और दुकानों में पानी भर गया ऐसी परिस्थिति में नर्मदा समग्र भाग टोली सदस्य श्री श्याम श्रीवास एवं श्री गजेन्द्र गुप्ता जी और घाट टोली कार्यकर्ताओ ने श्रमदान कर दुकानदारो और बाढ़ प्रभावित परिवारों की मदद के लिए प्रशासन के साथ कंधे से कन्धा मिला कर कार्य किया साथ महाराजपुर संगम में रेवा प्रसादी प्रकल्प में खिचड़ी बनवाकर श्री श्याम श्रीवास जी द्वारा विस्थपित परिवारों को भोजन करवाया गया बाढ़ के उतरने के उपरांत सभी घाट टोली कार्यकर्ताओ ने घाट की स्वच्छता एवं तट पर रोपी गई हरियाली चुनरी के पेड़ पौधों को व्यवस्थित किया जो बाड़ के समय पानी में डूब गए थे अनेको पौधों के टी-गार्ड नीचे गिरे पड़े थे पेड़ों की डालिया टूटी पड़ी थी सभी को श्रमदान कर व्यवस्थित किया गया। □

बाढ़ प्रभावितो के बीच नर्मदा समग्र की भूमिका (मालवा - निमाड़ भाग)

इस वर्षाकाल में माँ नर्मदा में आई बाढ़ ने सबको हिलाकर रख दिया। माँ नर्मदा के इस रौद्र रूप ने सारी योजनाओं एवं सुरक्षा हेतु किए गए सारे इंतजामों को दरकिनार कर दिया। बाढ़ के कारण हुए नुकसान की कितनी और कैसे भरपाई होगी यह कहना मुश्किल है।

माँ नर्मदा किनारे के रहवासियों से चर्चा के दौरान यह जानकारी मिली कि इतनी भयानक बाढ़ पहली बार देखने को मिली। 1820 में जब माँ नर्मदा जी पर बांध नहीं थे, तब इतनी बाढ़ आई थी लेकिन उस समय किनारों पर रहने वालों की संख्या अधिक न होने के कारण इतना नुकसान नहीं हुआ जितना इस समय हुआ। इस आपदा की घड़ी में कई स्वयंसेवी संस्थाओं ने समाज जनों ने बाढ़ प्रभावितों को आश्रय दिया उनके भोजन की चिंता जब तक की जब तक सब कुछ सामान्य नहीं हुआ।

इस वर्ष मां नर्मदा में अतिवृष्टि के कारण आई बाढ़ में नर्मदा समग्र के कार्यकताओं द्वारा अपने-अपने स्तर पर विभिन्न प्रकार से बाढ़ पीड़ितों की सहायता की ओंकारेश्वर में नर्मदा समग्र कार्यकर्ता श्री मनोज त्रिवेदी जी द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से ओंकारेश्वर विद्युत परियोजना द्वारा छोड़े जा रहे पानी की पल प्रतिपल की खबर पहुंचाई गई जिससे नीचे समस्त समाज जनों को यह सूचना पूर्व में ही मिल जाया करें कि नर्मदा जी का पानी ओंकारेश्वर से इतना छोड़ा गया है अतः हमारे यहां घाट पर जल स्तर क्या होगा इसी क्रम में नावघाटखेड़ी बड़वाह के नर्मदा समग्र के कार्यकर्ता श्री देवेश समग्र ठाकुर द्वारा निचली बस्ती के लोगों को आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई गई एवं उन्हें सुरक्षित स्थानों तक पहुंचने में भी सहयोग प्रदान किया गया इसी प्रकार हर घाट पर नर्मदा समग्र के कार्यकताओं द्वारा यथायोग्य सहायता प्रदान की गई ब्राह्मण गांव जो कि इस बाढ़ में आती प्रभावित ग्राम रहा वहां पर नर्मदा समग्र की टोली द्वारा बाढ़ में फंसे हुए लोगों को इकट्ठा कर प्रशासन से संपर्क स्थापित कर नावों के माध्यम से एवं पूर्व में जन जागरण कर उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। बाढ़ से 90 प्रभावित परिवारों को सद्गुरू सेवा संघ आनंद नगर के सहयोग से नर्मदा समग्र की ओर से ब्राह्मण गांव जिला बड़वानी को भोजन किट एवं आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई गई !

नर्मदा के दक्षिण तट पर स्थित भट्टयाँन में नर्मदा समग्र कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में 150 परिवारों को श्री प्रकाश स्मृति सेवा संस्थान खरगोन द्वारा भोजन सामग्री उपलब्ध करवाई गई !□

नर्मदा समग्र न्यास द्वारा रेड क्रॉस सोसाइटी म.प्र. के सहयोग से आयोजित हायजिन किट वितरण कार्यक्रम

ग्राम महलगांव, तहसील सोंडवा जिला अलीराजपुर की 140 महिलाओं को रेडक्रास सोसायटी द्वारा प्रदत्त हायजिन किट का वितरण 22 सितम्बर 2023 को किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सोंडवा तहसीलदार महोदय श्री गोस्वामी, भाग टोली सदस्य श्री मिथुन जी यादव, उपस्थित रहे। मां नर्मदा एवं स्व. अनिल माधव दवे जी के चित्र के पूजन पश्चात नर्मदा अष्टक कर किया गया। महिलाओं को महिला एवं बाल विकास परियोजना अधिकारी सोंडवा द्वारा उपलब्ध कराई गई सूची अनुसार किट वितरण किया गया। इस अवसर पर नर्मदा समग्र के राज्य समन्वयक श्री मनोज जोशी, मालवा निमाड़ रेवा सेवा एवं एंबुलेंस स्टाफ एवं अन्य स्थानीय कार्यकता उपस्थित रहे ।□

वार्षिक सदस्यता प्रपत्र

मैं ..... एक वर्ष के लिए नर्मदा समग्र त्रैमासिक पत्रिका की सदस्यता लेना चाहता/चाहती हूँ।

4 अंक - वार्षिक शुल्क 100 रूपये, (पोस्टल शुल्क सम्मिलित)

नाम : _____ लिंग : _____

कार्य : व्यवसाय ☐ कृषि ☐ नौकरी ☐ विद्यार्थी ☐ संगठन ☐

संस्था : _____ दायित्व/पद : _____

फोन : _____ मोबाइल : _____ ई-मेल : _____

पता : _____

जिला : _____ पिन कोड : _____ राज्य : _____

भुगतान विवरण : चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. : _____ दिनांक : _____ रूपये : _____

अदाकर्ता बैंक : _____ शाखा : _____

खाते की जानकारी (ऑन लाईन भुगतान हेतु)
Narmada Samagra State Bank of India Shivaji Nagar Branch, Bhopal, M.P. Ac no. 30304495111 IFSC: SBIN0005798

दिनांक : _____ हस्ताक्षर : _____

"नदी का घर"
सीनियर एमआईजी -2, अंकुर कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, मध्यप्रदेश - 462016
दूरभाष + 91-755-2460754 ई-मेल : narmada.media@gmail.com

चौंसठ योगिनी मंदिर

भेड़ाघाट जलप्रपात के पास ही एक टेकरी पर दसवीं शताब्दी में बना पुरातन पाषाण मंदिर है। यह टेकरी नर्मदा और सरस्वती नदियों के बीच लगभग 50 फीट ऊँची एक गोल पहाड़ी का समतल हिस्सा है। यहाँ 109 सीढ़ियों को पार कर पहुँचा जा सकता है। मंदिर में 64 कलचुरिकालीन योगिनी मूर्तियाँ स्थापित होने के कारण यह चौंसठ योगिरी मंदिर कहलाता है। यहाँ स्थित तीसरी योगिनी 'रूषिणी' नर्मदाजी की मूर्ति है। जो जटामुकुट पहने अपने वाहन मगर पर आसन्न है। मूर्ति के हाथ खंडित है और आकार 79·126 से.मी. है।

जबलपुर शहर से 22 किमी दूर भेड़ाघाट। अद्‌भुत संगमरमर की विशाल चट्‌टानों से सुशोभित आकर्षक भव्य जल प्रपात। दूध धारा सी बहती माँ नर्मदा। इस अद्‌भुत दृश्य को निहारने देश-विदेश से लाखों पर्यटक यहाँ आते हैं। सफेद विशाल शिलाखंड़ों को चीरती, कहीं तेज गति से तो कहीं पंख सृदश्य श्वेत संगमरमर के तटों से टकराती रेवा! दाहिनी एवं बाई ओर विशाल चट्‌टानों की श्रृंखला ऐसी उत्कृष्ट है कि मानो किसी शिल्पी ने अपनी श्रेष्ठ कारीगरी से व्यवस्थित जमा दी हो। धवल जलधारा जब उत्ताल चट्‌टानों से नीचे गिरती है तो पूरा वातावरण हवा में उड़ते जल कणों से भर जाता है। शरद का चाँद जब अपनी चाँदनी से इस स्थान को नहलाता है तो यह स्थान स्वर्ग का आभास देता है।

(साभार - नर्मदा समग्र Rafting through a civilization A TRAVELOGUE)

www.narmadasamagra.org RNI No. - MPHIN/2011/38276

जहर घुल रहा नभ, जल, थल में
जहर अन्न, सब्जी, फल में
सोचो क्या खायें, क्या न खायें
जहरों से कैसे जान बचायें...

मैकल
नेचरल फाउंडेशन

नर्मदा जल ग्रहण को रसायन मुक्त करने की पहल

स्वस्थ परिवार - स्वस्थ भूमि
स्वस्थ नर्मदा मैया

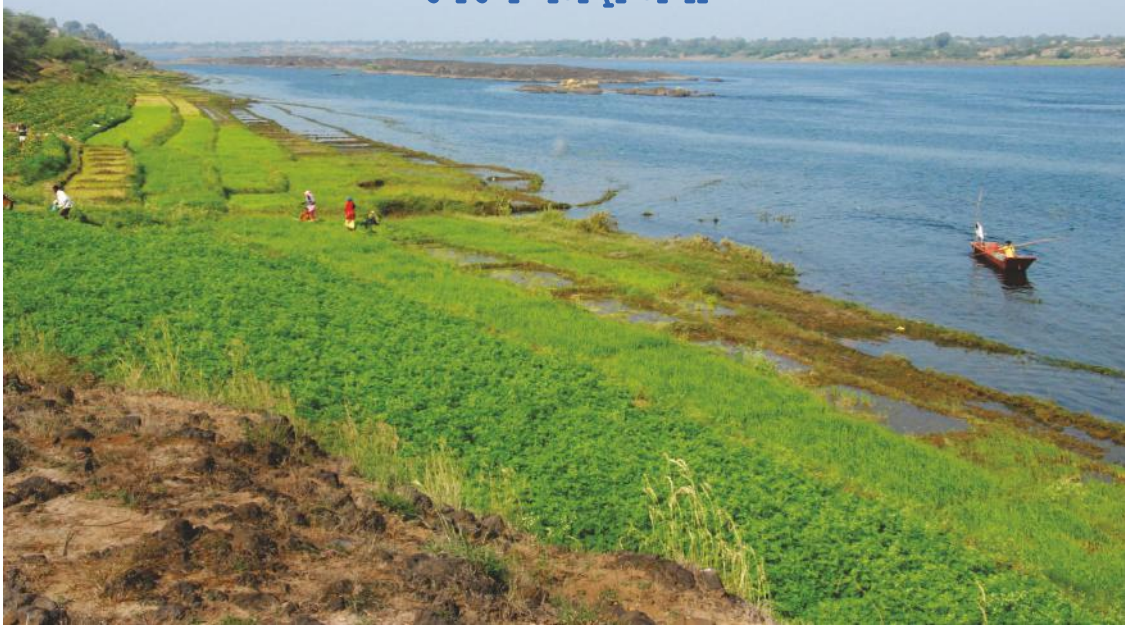

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्री करण सिंह कौशिक द्वारा नियो प्रिंटर्स, 17 बी-सेक्टर, औद्योगिक क्षेत्र गोविन्दपुरा, भोपाल एवं नदी का घर सीनियर एम.आई.जी.-२ अंकुर कॉलोनी, पारूल अस्पताल के पास शिवाजी नगर, भोपाल-462016 से प्रकाशित।
संपादक कार्तिक सप्रे। फोन नं. : 0755-2460754